हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज की तालीम

(सत्संदेश अप्रैल 1964 में प्रकाशित प्रवचन)

परमात्मा ने इन्सान बनाए। इन्सान आत्मा देहधारी को कहते हैं। आत्मा की जात वही है जो परमात्मा की जात है। परमात्मा ने कोई मोहरें लगा के नहीं भेजा कि तुम कौन हो। हिन्दू हो, मुसलमान हो। ये समाजें हम लोगों ने बनाई हैं। किस लिए ? कि इन्सान मिलजुल कर रहने वाली मखलूक है। वह Social Being है। इसलिए समाजों के खास-खास कानून बना दिये ताकि सोसाइटी में Corruption (दुराचार) न फैले। लोग नेक पाक जीवन बसर करें, सदाचारी बनें। इन्सान-इन्सान के काम आए ताकि मनुष्य जीवन की जो यात्रा है वह सुख से तय हो जाये। यह है समाजों का पहला पहलू। यह ज़मीन की तैयारी है। इसका जो दूसरा पहलू है, उसे भी समाजों ने नज़र-अन्दाज नहीं किया। वह है आत्मा का अनुभव करना Self-Knowledge अथवा अपने आप को जानना और God-Knowledge अथवा प्रभु को पहचानना। इस बात का अनुभव प्राप्त करना कि तुम कौन हो।

यह जो छः फुट का पुतला तुम लिए फिरते हो क्या तुम यह हो ! हम इस पुतले को चलाने वाले हैं। हम Indweller of the house अथवा शरीर रूपी इस मकान के मकीन हैं। हम यह मकान नहीं। इस मकान के अन्दर जो मकीन है, जो इसे चला रहा है, वह हम हैं। एक दिन आता है जब मकीन को मकान छोड़ना पड़ता है। जो भी आज तक दुनियाँ में आया उसे शरीर खाली करना पड़ा। यह काल का मकान है।

खिंथा काल कंवारी काया जिन्द वोहटी मरन वर लै जासी परनाये ॥

इसकी काल से सगाई हो चुकी है। वह आकर एक दिन इसे ले जायेगा। सो इस मकान का जो मकीन है, वह हम हैं। उसे जानना है हम ने। जिसने उसे जान लिया वह परमात्मा को जानने के योग्य हो गया। जिसने उसे नहीं जाना वह प्रभु को नहीं जान सकता। इसका कारण क्या है ? परमात्मा महाचेतनता का समुद्र है। आत्मा उसकी अंश है। यह भी चेतन है, Conscious Entity है। चेतन ने ही महाचेतन को जानना है, न मन ने, न बुद्धि ने, न प्राणों ने। सो जब तक हमें अपने आपे का अनुभव नहीं होता हम परमात्मा को नहीं जान सकते। आत्मा और परमात्मा दोनों

भाई, जब से यह दुनिया बनी, एक ही मकान में, एक ही संगत में रह रहे हैं, मगर अफसोस कि आपस में इनकी बातचीत नहीं। आत्मा परमात्मा को नहीं जान रही। सो दो पहलू बने। एक बाहरी जिस्मानी लिहाज से जिस्म और उसके ताल्लुकात का पहलू, इन्द्रियों के घाट का दृश्य का ज्ञान और दूसरा पहलू है अपने आप को जानना और परमात्मा को पहचानना। परमात्मा अदृश्य है, अगोचर है, जब तक हम दृष्टमान दुनिया में हैं और इन्द्रियों के घाट द्वारा इसमें लम्पट हो रहे हैं हम उसे नहीं जान सकते। यह Digest है, निचोड़ है, उस मज़मून का जो सब महात्माओं ने दुनिया के सामने पेश किया है। गुरुबानी में आया है -

एवड उच्चा होय कोए। तिस उच्चे को जाने सोए॥

यह परमात्मा अति सूक्ष्म और अगम है। हम जब तक जिस्म का रूप बने हुए हैं उसे देख नहीं सकते। जब तक हम उतने ही सूक्ष्म और अगम न हो जाएँ, हम उस प्रभु को नहीं जान सकते। यह मज़मून सब महात्माओं ने दुनिया के सामने रखा। हम दुनिया में आते रहे, आत्मा इन्द्रियों के घाट पर बैठ कर जिस्म का रूप हो गई, जगत का रूप हो गई। इतने जुड़ गये, हम शरीर से Identify हो गए कि अपने आप को भूल गये। श्री गुरू नानक साहब ने इस हालत का फोटो खींचा है, फरमाते हैं -

भूलावड़े भुल्ली भुल्ल-भुल्ल पच्छोताणी।

हम भूले रहे। हम थे इस जिस्म के चलाने वाले, इसके मकीन, लेकिन हम इसका रूप बने रहे, हम जिस्म से इतने Identify हो चुके हैं कि हमें यह होश ही नहीं रहा कि हम इस जिस्म के मकीन हैं, हम यह मकान नहीं। कोई हमसे पूछे कि तुम कौन हो तो हम कहते हैं, मैं रामदास हूँ, मैं अल्लादीन हूँ, मैं रामसिंह हूँ। छोटे बच्चे को हमारी निसबत ज्यादा एहसास होता है। उससे पूछो तो वह आंख फाड़ता है और मुँह खोलता है कि मैं यहां हूँ। ज्यों ज्यों वह बड़ा होता है यह एहसास कम होता जाता है। हम जिस्म नहीं बल्कि इस जिस्म के चलाने वाले हैं। शरीर रूपी मकान के मकीन हैं। यह आदर्श है जो हज़रते इन्सान के सामने है। जिसने मनुष्य जीवन पाकर इसका अनुभव कर लिया उसका जीवन सफल हो गया। जिसने यह काम नहीं किया, वह जन्म गंवा गया। अब देखिये हम क्या कर रहे हैं ? हम जिस्म जिस्मानियत और उसके तल्लुकात में दिन रात लम्पट हो रहे हैं। कभी हमारी

तवज्जो अपने आप पर न गई। उस मकीन पर न गई जिसने एक दिन यह मकान खाली कर जाना है -

तिच्चर वसे सहेलड़ी जिच्चर साथी नाल ।।
जाँ साथी उठि चल्लेया ताँ धन खाकुराल ।।

आत्मारूपी सहेली जब तक इस जिस्म के साथ बस रही है, जब तक साथी इसमें बस रहा है, यह घर आबाद है। जब इस में से निकल जाता है तो यह जिस्म मिट्टी का ढेर रह जाता है। इसे मिट्टी में मिला दिया जाता है। इस मकीन को जानने का नाम, चेतन को जड़ से अलग करने Analyse करने का नाम है, अपने आप का अनुभव।

कहो नानक बिन आपा चीन्हे, मिटे ना भ्रम की काई ।।

जब तक हम अपने आपको चीन्हते नहीं, जिस्म का जो मकीन है, उसे जिस्म से अलग करके Analyse करके नहीं देखते, जब तक हम अपने आप का अनुभव नहीं करते, वह ताकत जो इस जिस्म को चला रही है, उसे जिस्म से आज़ाद करके नहीं देखते, भ्रम नहीं जाता। भ्रम किसे कहते है ? एक चीज़ हो कुछ, नज़र कुछ और आए, यही भ्रम है, माया है। हम जिस्म का रूप बने हैं, जगत का रूप बने बैठे हैं। इतना भूल गये हम अपने आप को कि हमें जगत भी, जिस्म भी, सत भास रहा है, हालाँकि दोनों बदल रहे हैं, यह जिस्म भी बदल रहा है, जगत भी बदल रहा है।

इसका कारण क्या है ? अगर दो चीजें एक तरफ़ एक ही रफ़्तार से चली जा रही हों, और हम एक में बैठे हों, तो मालूम होता है वह चल नहीं रही हैं, खड़ी हैं। दरिया और बेड़ी (किश्ती) की मिसाल लीजिये। पानी का वही रूख़ है जो बेड़ी का। दोनों एक रफ़्तार से बह रहे हैं। जो बेड़ी पर सवार हैं, वह गिर्दा-गिर्द पानी पर नज़र डालते हैं तो मालूम होता है कि पानी खड़ा है और बेड़ी भी खड़ी है। एक आदमी बेड़ी से बाहर आ जाता है, तो वह बेड़ी में सवार अपने साथियों से कहता है, ''भाइयो ! तुम बह रहे हो।'' वह कहते हैं ''कहाँ बह रहे हैं हम ! हम तो खड़े हैं।'' यह धोखा है जिसमें सब बह रहे हैं। क्या पढ़े क्या अनपढ़, क्या गरीब क्या अमीर, क्या हाकम क्या मेहकूम, सब इसी धोखे में जा रहे हैं। एक दिन आता है, जब रूह जिस्म से निकलने लगती है, तब कुछ होश आता है कि यह सब कुछ जो हम करते रहे, फज़ूल था।

कहे कबीर तेही नर जागे॥ जब जम का डंड मूंड में लागे ॥

सारी उम्र इन्सान जिस्म और उसके संबंधों में लम्पट रहता है। होश उस वक्त आता है जब काल का डंडा उस के सिर पर लगता है।

प्राणी तू आया लाहा लैण ।। लगा कित कुफकड़े सब मुकदी चल्ली रैण ॥

कि हे प्राणधारी इन्सान, तू मनुष्य जीवन का लाहा (लाभ) परम अर्थ पाने के लिए दुनिया में आया था, तू फ़ज़ूल कामों में, कुफकड़े कहते हैं फ़ज़ूल कामों को, लग गया। तेरी आयु रूपी रात्रि बीती चली जा रही है। यह किन की नज़र है ? जिनकी आँख खुली है। जिन्होंने अपने आप को जाना और प्रभु को पाया, यह उनकी नज़र है।

आत्म अनुभव का मज़मून भी एक बाकायदा साईंस है, जैसे Astronomy (सितारों का ज्ञान), Botany (पौधों और वनस्पति का ज्ञान) Geology (पृथ्वी की बनावट का ज्ञान) या और दुनिया की साईंसें हैं, ऐसे ही यह भी एक बाकायदा साईंस है। दुनिया के ज्ञान अपनी जगह हैं, मगर उनका सम्बन्ध इन्द्रियों के घाट से है, उनमें संतुष्टि नहीं। आत्म-ज्ञान यानी अपने आपको जानने की जो साईंस है, उसमें संतुष्टि है।

भारद्वाज ऋषि से सवाल किया गया-'महाराज ! वह क्या चीज है जिसके पाने से सब कुछ पाया हुआ हो जाता है ?'' उन्होंने इसके जवाब में खोल कर समझाया कि दो तरह की विद्याएं हैं दुनियाँ में - एक अपराविद्या, दूसरी पराविद्या-बाहर दुनिया के रस्म रिवाज़, पढ़ना, पढ़ाना, तीर्थ, व्रत, होम, दान येह सब चीजें अपराविद्या में शामिल है। इन सब कामों की गरज़ यह है कि इन्सान नेक पाक जीवन बसर करे, वह सदाचारी बने। यह परमार्थ के लिये ज़मीन की तैयारी है। इससे आत्म कल्याण नहीं होगा। आत्म कल्याण और पूर्ण संतुष्टि आत्म ज्ञान से ही होगी। हमारी आत्मा इन्द्रियों के घाट पर जिस्म का रूप बनी बैठी है, जगत का रूप बनी बैठी है। इसे जिस्म से Liberate (तन मन से आज़ाद) करके, इसका अनुभव करना और प्रभु को जानना, यह है पराविद्या। इससे दुनिया को देखने वाली आँख बदल जाती है, Angle of vision अर्थात् दृष्टिकोण बदल जाता है।

इस इल्म (ज्ञान) को पाने के लिए किन बातों की ज़रूरत है ? कोई भी इल्म

हासिल करना हो, उसके लिये खास-खास चीज़ों की ज़रूरत होती है। परमार्थ के लिये पहली ज़रूरी चीज़ यह है कि इन्सान के अन्तर में उसके पाने की इच्छा पैदा हो। जिसे भूख न लगी हो उसको रोटी से क्या ? जिसे गाना सीखना ही नहीं, चाहे तानसेन उसकी जूतियाँ झाड़ता फिरे, उसे कोई वास्ता नहीं। यह इच्छा कब पैदा होती है ? जब इन्सान दुनिया के ऊंच-नीच से, सुख-दुख से गुज़रता है। कभी मौत, कभी बिमारी, तरह तरह की मुसीबतों और मुश्किलों से गुजरता है तो फिर वह सोचता है, अरे भाई यह बात क्या है ? जिसके सामने जिन्दगी की पहेली, Mystery of life, का सवाल आया, वह उसे हल करने के लिये, कोई न कोई उपाय करेगा। यह कुदरती बात है।

बुद्ध थे। एक बार शहर को गये सैर करने। वहाँ देखा, एक बूढ़ा आदमी लकड़ी के सहारे लड़खड़ाता चला जा रहा है। उन्होंने इससे पहले कभी बूढ़ा आदमी देखा नहीं था। पूछा यह क्या बात है। जवाब मिला, इन्सान बूढ़ा हो जाता है। बुद्ध बड़े हैरान हुए कि इतनी सुन्दर काया इस हाल को पहुँच जाती है।

आगे गये, चार भाई एक मुर्दे को कन्धे पर उठाये लिए जा रहे थे। पूछा यह क्या है। जवाब मिला, इन्सान की मशीन, जो जिस्म है, उसे एक दिन खाली करना पड़ता है, जब मकीन इस मकान से निकल जाता है। बुद्ध ने सोचा इतनी सुन्दर काया की यह गति हो जाती है, यदि इसका निवासी, मकीन, इस मकान से निकल जाए। दिल को चोट आई। इतिहास बताता है कि वह अपने घर में गये। उसी रात उनके लड़का हुआ था। दुनियादारों के लिए यह बड़ी खुशी का दिन होता है, मगर उनके दिल दिमाग में Mystery of life, जीवन की पहेली, को हल करने का सवाल घर कर गया था। घर-बार छोड़ कर जंगलों की राह ली और इस सवाल को हल करने में लग गये।

जब मनुष्य दुनिया के ऊँच-नीच से गुज़रता है और ऐसी चीज़ें उसके सामने आती हैं तो वह सोचता है कि यह क्या बात है ? जिस मनुष्य के अन्तर में यह हालत हो, उसके दिल और दिमाग में इच्छा होती है यह जानने की कि यह क्या पहेली है ? वह कौन सी वस्तु है जो इस शरीर को चला रही है और जो एक दिन इस में से निकल जाती है ? वह हम हैं। वह हमारा अपना आप है। हमने उसे जानना है। दूसरी बात यह है कि जिस के अन्तर में यह इच्छा जाग उठी, कुदरती बात यह है कि वह उन लोगों के पास जायेगा जिन्होंने ज़िन्दगी की इस पहेली को

हल कर लिया है, जो इस भेद को जानने वाले हैं। कोई भी इल्म हो, अन्तरी या बाहरी, उसके लिए अध्यापक की आवश्कता है। साधारण बावर्ची (रसोईया) का काम भी सीखना हो तो हैड बावर्ची के पास जाकर उसकी गालियाँ खानी पड़ती हैं, तब ठीक नमक डालना आता है। कोई भी विद्या सीखनी हो, उस विद्या के जानकार के पास जाना ही पड़ेगा। बाहर का ज्ञान, जो दृश्य का ज्ञान है, जो हम इन्द्रियों के घाट पर देख रहे हैं, उसके बारे में तो अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। फिर भी उसे सीखने के लिए, किसी पूरे उस्ताद की आवश्यकता होती है। जो अदृश्य का ज्ञान है, जहाँ, यह इन्द्रियाँ भी रह जाती हैं, पहले स्थूल इन्द्रियाँ, फिर सूक्ष्म और फिर कारण इन्द्रियाँ। एक ऐसी विद्या जो हमारे वहम और अनुमान से परे है, क्या उसको सीखने से लिए, किसी पूर्ण गुरु की आवश्यकता नहीं ? सो पहली बात यह है कि अन्तर में ज्ञान पाने की इच्छा हो। अब देखिये पूर्ण पुरुष दुनियाँ में आये। उन्होंने अपना घर-बार छोड़ा, बेआरामी सही। किस लिए ? परोपकार के लिए, हम सोये हुए जीवों को जगाने के लिए। हम लोगों ने उनसे क्या बर्ताव किया ? उन्हें कुराहिया तक कहा, उन लोगों ने, जो स्वार्थ से बन्धे हुए थे। इतिहास बताता है कि श्री गुरु नानक साहिब, जब कसूर शहर में जाने लगे, तो उन्हें शहर में नहीं जाने दिया, कि यह लोगों की अकलें बिगाड़ता है।

सो पहली बात यह है कि अन्तर में प्रबल इच्छा पैदा हो जानने की। जिस के अन्तर में यह इच्छा जाग उठे, वह कोई न कोई उपाय ज़रूर करेगा। वह क्या करेगा ? पहले किताबों में तलाश करेगा; डाईरेक्ट्रियों को देखेगा। जैसे आप को विदेश में जाना हो, तो पहले तो आप के मन में प्रबल इच्छा होगी वहाँ जाने की। फिर आप डाईरेक्टरी देखेंगे कि कौन सा जहाज़ जाता है वहाँ, कितना टिकट है, रास्ते में फ्रांसीसी, जर्मन और दूसरी ज़बानवालों से पाला पड़ेगा। इनकी बातें कैसे समझेंगे। वग़ैरह वग़ैरह।

कितना फिक्र करते हैं हम ? वहाँ गये तो रहेंगे कहाँ ? किस के पास ठहरेंगे ? हम दोस्तों के पास जाते हैं कि कोई पत्र लिख दे कि वहाँ स्टेशन पर हमें कोई Receive (रिसीव) करने आ जाये। जब हम डाईरेक्टरी देख रहे हो, उस समय कोई आदमी आकर कहे कि जहाँ आप ने जाना है, अभी-अभी एक पुरुष वहीं से आया है, तो हम क्या करेंगे ? हम डाईरेक्टरी को बन्द करके भागेंगे उसके पास। इसका मतलब यह नहीं कि डाईरक्टरी बेकार है। डाईरेक्टरी से भी कई बातें समझ

में आती हैं, लेकिन एक आदमी उस स्थान को देख कर आया है। हम कुदरती तौर पर उसके पास जाएंगे जो देख कर आया है। उसके बयान में सफाई होती है। वह आँखों देखी बात कहता है। डाईरेक्टरी वाला पढ़ के बतायेगा। दोनों के बयानों में बड़ा अन्तर है। यदि वह पुरुष जो विदेश-यात्रा से लौटा है, हमें यह कहे कि मैंने अगले महीने फिर जाना है, तो हमें कितनी खुशी होती है ? फिर डाईरेक्टरी की क्या ज़रूरत रह जाती है ? हम आत्मा हैं। आत्मा इस समय पिंड में, शरीर में कैद है, वह शरीर का जगत रूप बनी बैठी है। हमने सफर करना है, पिण्ड को छोड़ना है, To go into the beyond इस शरीर के पार, इस से ऊपर जाना है। महात्मा आये। उन्होंने पिण्ड को छोड़ने और रूहानी मण्डलों में सफर करने का प्रयोग किया। उन के इन प्रयोगों के हालात ग्रन्थों में मिलते हैं, जो हीरे जवाहरात से भी ज़्यादा कीमती हैं। मगर किन के लिए ? जिन्होंने उस यात्रा पर जाना है। बाकियों के लिए तो वह फज़ूल बातें हैं। हम ने उधर जाना है। कुदरती बात है, जिन की आत्मा पिण्ड को त्यागकर अण्ड ब्रह्माण्ड और उसके पार सफर करती हो, हम ऐसे की संगत करेंगे। उसके पास बैठने से सब गुत्थियाँ सुलझ जायेंगी। हर चीज़ आसान हो जायेगी। यह ग्रंथ पोथियाँ कहाँ से आई हैं ? यह इन्ही महापुरुषों के हृदय से निकली हैं ?

'उमलीक लाल एह वचन'

हीरे जवाहरात से भी कीमती हैं महापुरुषों के यह वचन, जिन्होंने आप के अनुभव को पाया, अपने आप को जाना और प्रभु को पहचाना। उनकी सोहबत में, यह सब कुछ जो पुस्तकों में लिखा है, मिलेगा। वह यह ज्ञान भी है और भी बहुत कुछ है।

श्री गुरु नानक साहब ने बारह-बारह वर्ष की चार उदासियाँ धारण कीं। बारह वर्ष की पूरी एक उदासी में उन्होंने ईरान, अरब आदि देशों का सफर किया। श्री गुरु ग्रंथ साहब में उनकी केवल एक ही साखी मिलती है फारसी में। क्या वह बारह वर्ष एक ही साखी का उच्चारण करते रहे ? बात यह है कि श्री गुरु अर्जुन साहब, पाँचवी पातशाही ने, जितनी भी महापुरुषों की बाणियाँ मिल सकीं, वह सब एक जगह इकट्ठी कर दीं। वह एक बड़ा भारी ज़्याफतखाना (समूह) है रुहानियत का, A Banquet Hall of Spirituality. इन अमूल्य बाणियों के पढ़ने से हमारे अन्दर शौक पैदा होता है परमार्थ का। किन्तु खाली पढ़ना काफी नहीं। किसी अनुभवी पुरुष के पास जाकर उससे समझने की ज़रूरत है। यह आज सुबह का मज़मून था।

कबीर साहब के पास एक बार कोई पंडित बहस करने आ गए। ऐसा अक्सर होता है कि पंडित लोग अनुभवी महापुरुषों के पास बहस बाज़ी के लिए पहुंच जाते हैं। नतीजा क्या होता है ? एक इल्म के घाट पर बैठा है, दूसरा अनुभव पा चुका है। दोनों सहमत कैसे हों ? पंडित बहस के लिए आया तो कबीर साहब ने फ़रमाया—

तेरा मेरा मनुवा कैसे इक होई रे, मैं कहता हूँ आँखिन देखी,
तू कहता कागद की लेखी।

कि मैं जो आँख से देख रहा हूँ, वही कह रहा हूँ। तू पढ़ा पढ़ाया सबक रट रहा है। तेरा मेरा मनुवा कैसे एक हो ? तू और मैं कैसे सहमत हो सकते हैं ? सो अनुभवी महापुरुष, जो आत्म अनुभव को पा चुका है, उसकी सोहबत में ही जिन्दगी की यह पहेली हल हो सकती है। यह दूसरा सवाल है। जितने भी धर्म ग्रंथ आज दिन तक लिखे गये, सब ने इस बात पर ज़ोर दिया। गुरुबाणी में आया है —

बिन गुरु पूरे नाही उद्धार ॥ बाबा नानक आखे एह विचार ॥

चाहें शंकर के समान तीव्र बुद्धि वाला क्यों न हो जाए, गुरु के बिना जिन्दगी की गुत्थी हल नहीं हो सकती। क्यों ? बुद्धि का ज्ञान, सब दृश्य का ज्ञान है। परमार्थ अदृश्य का ज्ञान है। जहाँ दुनिया के सारे फिलसफे खत्म हो जाते हैं, वहाँ परमार्थ की क, ख शुरू होती है। Where the world's philosophies end, there religion starts. बुद्धि से बाहर का भी ठीक ज्ञान नहीं मिलता। बुद्धि As a matter of inference अन्दाज़ा ही लगाती है। अनुभवी देख कर बयान करता है। तुलसी साहिब फ़रमाते हैं —

राम कृष्ण ते को बड़ो, तिन भी तो गुरु कीन।
तीन लोक के नायका, गुरु आगे आधीन ॥

अर्थात, राम, कृष्ण से कौन बड़ा होगा। त्रिलोकी नाथ थे, मगर गुरु के आगे उनका भी सीस झुका रहा। किस लिए ? आत्म अनुभव के लिए। उपनिषदों में ज़िक्र आता है कि इंगरिस ऋषि ने देवकी के लड़के कृष्ण को शब्द की तालीम दी। आत्म अनुभव के लिए, किसी अनुभवी पुरुष के पास जाना होगा। किताबों से शौक मिलता है। गवाहियाँ भी मिलती हैं, मगर पुस्तकों का ठीक तात्पर्य, Right import,

हम समझ नहीं सकते, जब तक कोई अनुभवी पुरुष खोल कर न समझाए। बुद्धि से हम व्याख्या तो कर लेते हैं, मगर कई जगह गलती हो जाती है। एक मिसाल है। गुरबाणी कहती है —

जाका घंटा बजे चौकुन्ठ ॥

वहाँ घण्टे की ध्वनि का ज़िक्र है। हाफ़िज ईरान में बैठे हुए यही बात कह रहे हैं —

कस नमे दानद कि मंजिल गहे माशूक कुजा अस्त।
हमी अस्त के अजाँ बागे जिरस मी आयद ॥

अर्थात कोई नहीं जानता कि मेरे प्यारे (प्रभु प्रीतम) की मंजिल कहां है, मगर इतना है कि वहाँ से घंटे की धुनि आ रही है। यहाँ भी घंटे का ज़िक्र है। बाहिर देखो, हम जो पूजा पाठ करते हैं उसमें घंटा बजाते हैं। मन्दिर में जो भी दाखिल होता है, वह पहले घंटा बजाता है। हर धर्म स्थान में घंटे और शंख की निशानियाँ मिलती हैं। जैन और बुद्ध मत के मन्दिरों में, ईसाइयों के गिरजों में भी घंटे की निशानी मौज़ूद है। एक जैसी निशानी, यह Common symbol है क्या ? बुद्धि वाले इसका क्या अर्थ करेंगे ? मैं जब नौकरी पर था उन दिनों की बात है। मेरे मातेहत एक ईसाई सुपरिटेण्डेण्ट थे। मैंने पूछा कि यह जो सारे धर्म स्थानों में घंटे की निशानी नज़र आती है, उसका मतलब क्या है ? उन दिनों लाहौर का बिशप ईसाइयों में बड़ा लायक समझा जाता था। उनसे पूछा गया तो बोले, It is just to call together all men for paryer, कि यह लोगों को प्रार्थना के लिए इकट्ठा करने के लिए घंटा बजाया जाता है। गिरजे के लिए तो यह बात मान ली, लेकिन मन्दिर में तो हर आदमी जाकर अपने हाथ से घंटी बजाता है। अब विद्वान इस बात को क्या समझेगा ? इल्मे सीना (पराविद्या) और इल्मे सफीना (अपराविद्या) में बड़ा अन्तर है। धर्म ग्रंथों की वाणियाँ अनुभवी महापुरुषों के कलाम हैं। अगर उन्हें विद्वानों से सुनोगे तो उनका सही मतलब Right import नहीं समझ सकोगे। धर्म-ग्रन्थों को हम पढ़ सकते हैं, लेकिन उनके सही मतलब हम नहीं समझ सकते जब तक कोई अनुभवी पुरुष खोल कर न समझाए। यह आत्मज्ञान का मज़मून है जो बाकायदा एक साईंस है। वह साईंस क्या है ? Self-knowledge प्रभु को पहचानने की साईंस। आत्मा को पहले इन्द्रियों से और फिर मन से आज़ाद करके, उसको

अनुभव करने का मज़मून है यह। जितना चाहो पढ़ते रहो, हक़ीकत को नहीं पा सकोगे। इसका मतलब यह नहीं कि पढ़ना ज़रूरी नहीं, मगर किताबों का सही मतलब समझने और उस मज़मून का इल्म और अनुभव पाने के लिए, किसी ऐसे के पास जाना होगा जो उस साईंस का माहिर है। उसका नाम कुछ रख लो। इस लिए धर्म-ग्रंथों में बार-बार ताकीद की गई है इसकी। गुरुवाणी कहती है —

बिन गुरु पूरे कोई ना पावै ॥ लख कोटि जे कर्म कमावे ॥

लाखों करोड़ों कर्म कर ले कोई, बिना गुरु के आत्म ज्ञान को पा नहीं सकता, अर्थात् अपने आपको जानने और प्रभु को पहचानने के काबिल नहीं हो सकता। इसका मतलब है कुछ आख़िर। सो दूसरी ज़रूरत है गुरू की। पहले अन्तर में प्रबल इच्छा हो। फिर तलाश के लिये उस विद्या के माहिरों के पास जाना होगा, जो उसके भेद से वाकिफ हैं। वह महात्मा क्या करता है ? वह आमिल है। उस भेद का जानने वाला है। हम लोग नावाफिक हैं। कुदरती तौर पर वह हमें पुराने महात्माओं के सफर के हालात सुनायेगा। हमें उनके कलामों (वचनों) के हवाले देकर, Quotations देकर समझाएगा। कभी कबीर साहब, कभी गुरु नानक साहब, कभी किसी और महापुरुष की वाणी में से हवाले देगा। यह कोई नई साईंस नहीं। पुरातन से पुरातन और सनातन से सनातन है यह। जब-जब महात्मा आये, इसे ताज़ा करते रहे। वह चले गये तो हम फिर भूल में पड़ गये। फिर कोई और महात्मा आया और उस तालीम को ताज़ा कर गया। हम मौजूदा ज़माने के लोग खुशकिस्मत हैं कि जितने भी महात्मा आज दिन तक आए, उन सबके कलाम (वचन) हमारी हिदायत के लिए मौजूद हैं। अगर हम पहले आते तो बहुत से कलामों से खाली रह जाते। अनुभवी पुरुष उन बाणियों के हवाले देता है तो सिर्फ हमारे समझाने बुझाने के लिए, वह इन किताबों का मुहताज नहीं। वह उस चीज़ को पा चुका है, जिसका ज़िक्र इन ग्रंथों में मिलता है। वह भी उसी रास्ते का जाने वाला है। वह हकीकत को देखकर बयान कर रहा है —

सुन सन्तन की साची साखी, सो बोलें जो पेखें आखी।

कि सन्तों की सच्ची शहादत (गवाही) को सुनो। वह सच्ची शहादत क्यों है ? वह वही कुछ कह रहे हैं जो वह अपनी आँख से देख रहे हैं। ऐसे अनुभवी पुरुष के पास जाओ। उनसे सवाल करो, अपने सवालों के जवाब लो। जब शंका समाधान

हो जाए और तुम्हारी तसल्ली हो जाए, तो फिर विश्वास आने लगेगा। फिर जो वह कहे, वह करो। उसकी Competency (समर्थ्या) पर विश्वास करके, उसके हुक्म की बजावरी करो। पहले सोहबत संगत करो। जब बातचीत से और सवाल जवाब करके यह पता लग जाए कि यह वही कुछ कहता है, जो और महात्मा कहते आये हैं, तो फिर तजरबे के तौर पर उसकी बात को मान लो। जैसे किसी रोगी के पेट में पानी पड़ा हो; डाक्टर कहता है कि तुम्हारे पेट में पानी है आप्रेशन करना पड़ेगा। रोगी ने देखा नहीं, मगर वह कहता है अच्छा भाई, कर लो आप्रेशन। ज़्यादा से ज़्यादा वह चार पाँच माहिर डाक्टरों का बोर्ड बिठा देता है। सारे डाक्टर वही रोग बतलाएँ तो वह अपनी प्यारी जान उसके हवाले कर देता है। रोगी ने खुद देखा नहीं कि उसके पेट में पानी है। लेकिन उसे डाक्टरों की समर्थ्या पर विश्वास है। डाक्टर कहते हैं कि आप्रेशन में तुम्हारी जान का ख़तरा है, हम जिम्मेदार नहीं। तुम लिख कर दे दो कि मर गए तो हमसे पूछताछ नहीं होगी। वह लिख कर भी दे देता है। इस तरह यहाँ भी (परमार्थ में) यही बात है। अनुभवी पुरुष भिन्न-भिन्न महात्माओं के कलामों के जो हवाले Quotations देता है तो सिर्फ हमें यकीन दिलाने के लिए। किसी सवाल का ठीक जवाब एक ही हो सकता है, दो नहीं। Two and two makes four दो जमा दो चार होते हैं। Truth is one सच्चाई एक है। जिन्होंने हक़ीकत को पाया वह अपने ज़माने की ज़बान और अपने-अपने तरीके पर उसे बयान करते रहे। हक़ीकत एक है। वह न बदली न बदलेगी। अनुभवी महापुरुष के पास जाए तो पूर्ण विश्वास करे उसकी बात पर। रामायण के बालकाँड में इस मज़मून को खोलकर बयान किया है —

मात, पिता और गुरु की वाणी। बिना विचार करिये परमानी॥

माता, पिता और गुरू जो बात कहें, वह बग़ैर किसा प्रमाण के, किसी सबूत के बिना मान लेनी चाहिये। जैसे उस्ताद पहली जमात के लड़के को पढ़ाता है, कहो अलफ, वह कहता है अलफ। कहो बे, वह कहता है बे। वह कहता 9x9=81, लड़का मान लेता है। वह समझ नहीं सकता कि 9x9=81 कैसे हो गए। जब उसकी Development (विकास) होती है, फिर समझ आती है। जब लड़का कॉलेज में जाता है तो उस्ताद सिद्ध करता है कि क्यों नौ जरब नौ एकासी होते हैं। उस वक्त लड़का इस बात को समझने के काबिल हो चुकता है। सो गुसाईं तुसलीदास जी फरमाते हैं कि माता, पिता और गुरू जो बात कहें, बग़ैर सबूत के उसे मान लो,

वरना तुम चल नहीं सकोगे —

उचित अनुचित जो किए बिचारो, आलस होए सिर पातक धारो।

पहले खूब विचार कर लो कि आप को बात ठीक मालूम होती है कि नहीं। बात को समझ लो, Reasoning is the help and reasoning the bar. बुद्धि विचार से काम ले लो। बात समझ में आ जाए तो फिर बुद्धि विचार को किनारे रख दो और अमल करो। अनुभवी पुरुष सब महात्माओं के विचारों के हवाले देकर, एक जैसी विचाराधारा की Common ground (साझी जगह) पर हमें लाता है। वह जो कुछ कहता है, आज़माइश के तौर पर As an experimental measure उसे मान लो। यह दूसरी बात है। अब अपनी तसल्ली कर लो कि वह समर्थ पुरुष है। शुरू-शुरू की बात है, हर इन्सान के अन्तर में यह तलाश होती है, जब मैं हज़ूर के चरणों में गया। जिस महापुरुष (श्री हज़ूर बाबा सावनसिंह जी महाराज) के चरणों में मुझे बैठना नसीब हुआ, और जिनकी यादगार में हम आज यहाँ बैठे हैं, यह शुरू-शुरू की बात है, किसी ने सवाल किया हज़ूर कितने ऊँचे हैं ? मैंने कहा, ''यह तो मैं जानता नहीं, मगर मेरे लिए वह काफी से ज़्यादा हैं।'' लड़का उस्ताद की लियाकत को पहले दिन नहीं जान सकता। इतना ज़रूर जानता है कि यह मुझ से ज़्यादा लायक है। जैसे-जैसे लड़का पढ़ लिख कर लायक होता जाता है, उस्ताद मुशकिल ज़बान इस्तेमाल करता जाता है। पहले वह बड़ी सरल भाषा में बात करता है, फिर ज्यों-ज्यों लड़का गूढ़ बातें समझने के काबिल होता जाता है, उस्ताद भी कठिन भाषा का प्रयोग करने लगता है। महात्मा के पास जाओ तो सुनो वह कहता क्या है ? उससे बात करो। सवाल जवाब करके अपने संशय निवारण करो। जो बुद्धि के मैदान में हैं वह जब तक किसी बात का Why and wherefore (कारण) न जान लें, तय न कर लें, यह न समझ लें कि यह चीज़ क्यों है, वह आगे चल नहीं सकते। अब काम क्या है जो हमें करना है। वह काम है, आत्मा को इंद्रियों से हटाना और नाम से, शब्द से, अन्तर की उस Divine link (प्रभुसत्ता) से जुड़ना, जिसका ज़िक्र आज के मज़मून में आ चुका है। अनपढ़ से कहा जाए कि यह सीढ़ियाँ हैं, ऊपर चढ़ जाओ, वह करने लग जाता है जो उससे कहा जाए। अब जो वह पूछे कि यह क्या है ? मैं क्यों ऊपर चढ़ूँ। वह अपने सवालों का जवाब हासिल करने के लिए रुक जाएगा। सो ज़्यादा बुद्धि का फैलाव भी इस रास्ते में रुकावट है। इसी लिए कहा है, Bookish knowledge is all wilderness.

(किताबी ज्ञान जंगल की तरह है)। सो पहले हर तरह के सवाल पूछ लो, यह क्यों, वह क्यों ? यह सब बातें पूछो। बात समझ आ जाए तो फिर बे चूं-चरां के उस पर अमल करो। स्वामी दयानन्द थे। जब स्वामी विरजानन्द जी ने उन से कहा कि दयानन्द; यह जो किताबें तुम साथ लाए हो इन्हें जमना में फेंक आओ ! दयानन्द जी बुद्धि के बड़े पहलवान थे, लेकिन उन्होंने जरा चूं चरां नहीं की। चुपचाप उठे और सारी किताबें जमना में फेंक आए। इसका नाम है हुक्म को मानना। वही पंडित दयानन्द आगे चल कर महर्षि दयानन्द, स्वामी दयानन्द बल्कि कहीं कहीं भगवान दयानन्द कहलाये। किसी महापुरुष की बड़ाई Greatness हुक्म को मानने ही में है।

'' हर के खिदमत कर्द ओ मखदूम शुद''

जिसने खिदमत की वह मखदूम (सेवा कराने वाला) बन जाता है। हाफिज़ साहब ने फरमाया —

''बमै संजादा रंगीन कुन गरत पी मुगा गोयद'

कि अगर मुर्शिद (गुरू) हुक्म दे कि नमाज़ पढ़ने वाला मुसल्ला शराब में रंग ले तो तू उसे शराब में रंग ले। हलचल मच गई, चारों तरफ। जो इस रास्ते के जानने वाले हैं, वह शराब क्यों इस्तेमाल करने लगे। बात अनोखी थी। बड़ी हलचल मची। काज़ी साहब बोले ''महाराज, आपने क्या कह दिया ?'' हाफिज़ साहब बोले, मालिक ने जो कहलवाया। काज़ी ने कहा, हमें समझाइये तो सही, वरना दुनिया में खलबली फैल जाएगी। शराब पीना मज़हब में मना है और आप ऐसे खुदा-रसीदा बज़ुर्ग (परमात्मा को पहुँचे हुए महापुरुष) ऐसी बात कह रहे हैं। हाफिज़ साहब ने कहा कि इस बात का मतलब समझना हो तो मेरे दोस्त के पास जाओ, जो कि सामने पहाड़ पर रहता है। काज़ी साहब वहाँ गए, तब वह साहब बोले आज रात शहर में वेश्या के घर में गुज़ारने के बाद, सुबह मेरे पास आना। अब काज़ी हैरान कि यह बन क्या गई ? एक कहता है कि मुसल्ला शराब में रंग लो। दूसरा कहता है कि रात वेश्या के घर में रहो। खैर हुक्म के अनुसार वह शहर में गया। वेश्या के मकान पर पहुँचा। वहाँ एक नई लड़की आई थी जिसका पहला दिन था बुरे काम का। जिसने कभी पाप न किया हो, वह पाप प्रवृत्ति में पड़ने से घबराता है। बाद में जब Imperial wall टूट जाए तो फिर शेर हो जाता है। वह लड़की काज़ी साहब के पास आई तो फूट-फूट कर रोने लगी। काज़ी ने उसे तसल्ली दी

तो उसने अपनी कहानी सुनाई। उसने बताया कि मैं मुसीबत की मारी हूँ। बाप के साथ सफर (यात्रा) कर रही थी कि रास्ते में काफिला लूटा गया और डाकू मुझे उठा कर ले गए। यह सुन कर काज़ी को अपने जीवन की घटना याद आ गई कि उसकी बेटी को भी इसी तरह डाकू उठा ले गए थे। काज़ी ने पूछा तेरा शहर कौन सा है ? वह शहर काज़ी का अपना शहर था। फिर पूछा कि किस मुहल्ले में तेरा घर था ? लड़की ने जो मुहल्ला बताया वह काज़ी का अपना मुहल्ला था। काज़ी ने पूछा कि पिता का नाम तुझे याद है ? लड़की ने जो नाम बताया वह काज़ी का अपना नाम था। बढ़कर लड़की को गले लगा लिया, और वहां से पहाड़ की चोटी वाले महात्मा के पास गए और उनके चरणों पर गिर गये और कहा, महाराज आपकी ज़ाहिरदारी और हक़ीकत में जो फर्क है वह राज़ समझा दो अब तो। वह बोले इसका जवाब हाफिज़ ही देंगे। काज़ी हाफिज़ साहब के पास पहुँचे तो उन्होंने यह दूसरी कड़ी लगा कर तुक पूरी कर दी -

के सालिक बे खबर न बवद, जे राहो रस्मे मंजिलहा।

अगर मुर्शिद (गुरु) तुझे कहे कि मुसल्ला शराब में रंग ले तो बे चूंचरां उसके हुक्म की तामील कर क्योंकि वह सारे ऊँच नीच के जानने वाला है।

अव्वल तो वह ऐसा हुक्म क्यों देगा ? लेकिन शुरू में उसकी बात समझ न आये तो भी जो वह हुक्म दे उसकी तामील करो। युद्ध के समय कमांडर हुक्म देता है फ़ायर (Fire), तो बे हील-हुज्जत गोली चला दो। बाद में पूछ सकते हो कि यह हुक्म क्यों दिया गया। मतलब यह कि बात समझ न भी पड़े तो भी हुक्म की बजावरी में हील हुज्जत न करो। जो गुरु कहे वह करो। दवा देकर जो परहेज़ वह बताये उसके मुताबिक करो। उस्ताद पर भरोसा आ जाये तो फिर जो वह कहे वह करो। यसू मसीह ने कहा

"If ye love me, keep my commandments."

जो मुझसे प्रेम करते हो तो मेरे वचनों पर फूल चढ़ाओ। इसका नाम है गुरु-भक्ति। गुरुभक्ति को कोई सींग नहीं लगे होते। गुरु की रज़ा में राज़ी रहना, उसके हुक्म की बजावरी करना, उसके कहे के मुताबिक जीवन बनाना और उसने जो सबक दिया है उसे याद करना, यही गुरुभक्ति है। श्री गुरु अमरदास साहिब ने एक जगह बताया है कि मालिक को पाने के लिये क्या चीज़ें ज़रूरी हैं ? फरमाते हैं -

हर सच्चा गुरु भक्ति पाइये, सहजे मन बसावनियाँ ।।

अरे भाई परमात्मा को हमने देखा नहीं । बड़े गौर से समझने वाली बात है यह । जिसमें वह मालिक प्रकट है, वह पोल (Pole) है उस मालिक का, जिसमें उस मालिक का विकास हो रहा है । ताकत के बारे में हजारों किताबें पढ़ डालो मगर पहलवान के चेहरे में और उसकी बातों में ताकत की जो झलकें मिलती हैं, पहलवान को देखकर ताकत का जो अनुभव होता है, वह किताबों में कहाँ मिलता है । ऐसे अनुभवी महापुरुष को देखने से, ''साहब आवे याद'' बे अख्त्यार मालिक की याद आती है ।

अब वह महापुरुष जो कहे, वह करो । गुरुभक्ति क्या है । गुरु का प्यार । जिसका प्यार हो उसके हुक्म को मानना । जो वह कहे वैसा करना । जिसका प्यार होगा उसका हुक्म भी मानोगे । वह क्या कहता है ? वह कहता है नेक पाक सदाचारी बनो ।

"Ethical life is a stepping stone to sprituality"

गुरुवाणी से आया है -

सतगुरु सिख के बन्धन काटे।। गुरु का सिख बिकार ते हाटे ।।

अर्थात् सतगुरु सिख (शिष्य) के बन्धन काटता है यदि वह विषय विकार से बचे ।

साध नाम निर्मल जां के कर्म ।।

बाहरी अभिव्यक्ति (Expression) तो यही है साधु की । सो सदाचार बहुत ज़रूरी है । सब के अन्तर परमात्मा है, इसलिए सब के साथ प्यार रखो । किसी का बुरा चितवन न करो । धन दौलत, विद्या या हकूमत के नशे में किसी से नफरत न करो और निष्काम सेवा—यह बाहरी लवाज़मा (आवश्यक चीज़) है परमार्थ को पाने के लिए । और यह सब कुछ करते हुये आत्मा को मन इन्द्रियों से ऊपर लाकर नाम से जोड़ना, इसके करने का नाम है गुरुभक्ति । प्यार से दिल-दिल को राह बनाओ । As you think, so you become. परमात्मा को हम ने देखा नहीं । किताबों में केवल उसका ज़िक्र पढ़ा है । हम उसका ध्यान कैसे ला सकते हैं ?

बिन पेखे कहो कैसो ध्यान ॥

परमात्मा ज्योति स्वरूप है। मगर क्या हमने उसे देखा है ? यह जो Wide Expanse (फ़ैलाव) है सूक्ष्म तत्वों का, उसमें हमारा ध्यान नहीं बनता। गुरु में वह मालिक प्रकट है। वह God-man है। God plus man अब यदि आप Guruman अर्थात गुरुमुख बन जायें तो तुम में परमात्मा आ गया कि नहीं ? वह यह नहीं कहता है कि मैं जिस्म हूँ। वह कहता है वह Power (पॉवर) जो इस जिस्म में प्रकट है, उसे पकड़ो।

''गुरु को मानस जानते, जन्म-जन्म होएं स्वान ॥''

बाहर वह कहता है कि मैं तुम्हारे जैसा इन्सान हूँ। महापुरुषों के चरणों में बैठ कर मुझे जो समझ आई है उससे फायदा उठा लो। वह तुम्हारा भाई बनना चाहता है। वह तुम्हारे जैसा जिस्म रख के आता है, तुम्हे कैद से छुड़ाने के लिए। मसीह से लोगों ने पूछा तुम कौन हो ? एक बार आप ही उन्होंने यह सवाल उठाया कि बताओ मैं कौन हूँ ? किसी ने कहा ''तू बढ़ई है और नसरथ का रहने वाला है।'' कोई बोला, ''जोज़फ का पुत्र है।'' मगर एक खुली आँख वाला भी था। उसने कहा-

" I know, Thou art Christ, son of the living God. "

अर्थात् तू मसीह है, जिन्दा खुदा का बेटा। यिसू ने कहा, ''देख यह बात तू मन बुद्धि के घाट पर नहीं कह रहा। यह बात मेरा पिता तुझ से कहलवा रहा है।'' फिर किसी ने कहा, ''काश तुम हमें अपने पिता के दर्शन करा देते।'' यह बात सुन के वह नाराज़ हुए। He grew indignant और फरमाया, '' अफसोस मैं इतनी मुद्दत तुम्हारे बीच रहा और तुम यह न जान सके कि मुझ में मेरा पिता काम कर रहा है ? I and my father are one.

यही गुरु अर्जुन साहिब कह रहे हैं -

'पिता पूत रल कीनी साँझ ॥''

फिर एक और जगह कहा है -

'पिता पूत एके रंग लीने ॥'

मसीह ने कहा, ''जिसने मुझको देखा, उसने मेरे पिता को देख लिया।'' फिर

एक उदाहरण देकर इस बात का स्पष्टीकरण किया और अपने शिष्यों को बताया कि उन्हें क्या करना चाहिए। उन्होंने फरमाया -

"I am the vine, thou art the branches."

अर्थात् मैं अंगूर का पेड़ हूँ। तुम उस पेड़ की शाखें (टहनियाँ) हो। जब तक टहनियाँ पेड़ से जुड़ी रहेंगी, वह फल देती रहेंगी। यदि वह पेड़ से कट जाएं तो वह फल नहीं देंगी। सो जब तक तुम मुझसे जुड़े रहोगे तुम भी फल लाओगे। इसलिये, "Thou cannot do without me." यह है गुरुभक्ति। गुरु भक्ति के राज़ (भेद) को खोलने की ज़रूरत है पर समय थोड़ा है। सभी महात्माओं ने गुरु भक्ति पर ज़ोर दिया है। यह So-called (तथाकथित) गुरुओं का ज़िक्र नहीं। आज बट्टा उठाओ तो गुरु मिलता है, लेकिन सच्चे गुरु कितने हैं, जिनमें मालिक प्रकट है। केवल वही उसका थोड़ा बहुत Contact (परिचय) दे सकता है। मसीह ने उदाहरण देकर अपने शिष्यों को बताया कि शाखों की तरह तुम भी मुझसे कट कर नहीं रह सकते। सब महात्माओं ने यह आदेश दिया है। अनुभवी पुरुष, गुरु, क्या कहता है ? वह कहता है, ''तुम जिस्म नहीं, आत्मा हो। तुम्हारे अन्तर में आत्मा भी है, परमात्मा भी है, इस वक्त तुम इन्द्रियों के घाट पर बाहर फैल रहे हो। बाहर से हटो और अन्तर्मुख होकर उसे देखो। ''नौ घर देख जो कामिन भूली, वस्तु अनूप न पाई।'' अर्थात् जो आत्मा रूपी स्त्री नौ घरों द्वारा, इन्द्रियों द्वारा, बाहर फैल रही है, वह हकीकत से दूर हो गई। महात्मा क्या करता है ? वह हमें बाहर अपराविद्या के साधनों में नहीं लगाता है। वह कहता है, छोड़ो पिंड। चलो अन्तर। दुनियाँ के फिलसफे जहाँ खत्म हो जाते हैं, वहाँ परमार्थ की ''क'' ''ख'' शुरु होती है।

Where the world's philosophies end, there the religion starts."

लोग कहते हैं कि पूर्ण पुरुष की निशानी क्या है ? यही कि वह लोगों को बाहरमुखी साधनों में नहीं लगाता। वह कहता है कि यह तुम्हारा शरीर ही हरि मन्दिर है। बाहर जो मन्दिर बनाए गए हैं वह इसी सच्चे हरि मन्दिर के नमूने पर बनाए गए हैं, हमारे समझाने बुझाने के लिए। इस शरीर रूपी मंदिर में ज्योति भी है, उदगीत, धुनि भी हो रही है घण्टे की। यह नर नारायणी देह है। सच्चा हरि मंदिर है यह शरीर, Body is the Temple of God, इसमें ज्योति भी है, श्रुति भी है। बाहर मंदिरों में जो ज्योति जगाई जाती है और घण्टा बजाया जाता है वह

अन्तर के नमूने पर ही है। जब तक यह बाहर से न हटे, अन्तर्मुख न हो, इसे यह अनुभव प्राप्त नहीं हो सकता। इस वक्त हमारी इन्द्रियाँ बाहर फैल रही हैं। सतगुरु के मिलने से हमें इन्द्रियों को उलटने की युक्ति मिल जाती है, वह साधन मिल जाता है, जिससे इन्दियाँ उलटने लग जाती हैं। वह सामने बिठाकर हमें तजुरबा कराता है अन्तर्मुख होने का। वह बताता है, How to invert, पिंड से ऊपर आने, इसे Transcend करने का तजुरबा देता है।

सत्गुरु मिलिये उल्टी भई भाई। जीवित मरे ताँ बूझ पाए॥

यह उल्टा मार्ग है। इन्द्रियों को जो अब बाहर फैल रही हैं उलटने का, उन्हें अन्तर्मुख करने का मार्ग। जब इन्द्रियाँ उलटने लगें, पिण्ड से ऊपर आने लगो अर्थात् जीते जी मरने लगो तो हक़ीकत नज़र आने लग जायेगी। यह मज़मून सुबह का था कि यह संसार के फलसफे जहाँ खत्म हो जाते हैं वहाँ चलो। अनुभवी पुरुष इसी पर बस नहीं करता। वह साथ हो बैठता शिष्य के।

सच्चा सत्गुरु सेव सच सम्हालेया,
अन्त खलोया आए जे सत्गुरु अगो घालेया।

अर्थात् सच्चे सतगुरु की सेवा करो। सच की कमाई करो। नाम जपो। किस लिए ? अन्त समय वह सामने आन खड़ा होता है। जब सारी दुनिया तुमको छोड़ जाती है वह सामने आ जाता है, अब भी पिण्ड छोड़कर ऊपर जाओ तो उसे सामने पाओगे।

बातो बाशद दर मकानो ला मकां, चूं बनामी अज़ सराओ अज़ दुकाँ।

अर्थात् जो इस दुनियाँ में, जंगलों, पहाड़ों और बियाबानों में तुम्हारा साथी और मददगार रहे और दूसरी दुनियाँ में भी, मर के जाओ तब भी और अब जीते जी पिण्ड को छोड़कर ऊपर जाओ तो भी, वह तुम्हारी रहबरी के लिए मौजूद है, ऐसे समर्थ गुरु की यह महिमा बखान की गई है। श्री गुरु नानक साहब ने इसका निर्णय किया है -

नानक कच्चड़ेयां स्यों तोड़ ढूँढ सज्जन सन्त पक्केयां।
एह जिवन्दे विछड़ें ओए मोयाँ ना जासी संग छोड़॥

अर्थात् कच्चे मित्रों से तोड़ और पक्के सज्जनों की तलाश कर। वह कौन है ?

वह सन्तजन हैं। यह बाहर के जो मित्र हैं, वह सब साथ छोड़ जाते हैं। कोई गरीबी में, कोई बिमारी में, कोई कमजोरी में साथ छोड़ जाता है। सन्त सच्चा सज्जन है। अन्त समय जब सब साथ छोड़ जाते हैं, वह फिर सिर पर आन खड़ा होता है। इतना ही नहीं, वह मरने के बाद भी साथ नहीं छोड़ता।

गुरुमुख स्यों कर दोस्ती, सत्गुरु स्यों लाए चित्त ॥

क्यों ? इससे तुम्हारा जन्म मरन का खेल खत्म हो जाएगा। यह है सन्तों की साईंस, सन्तों का विज्ञान। जबसे दुनियाँ बनी है, महात्मा आते रहे और इस विद्या को ताज़ा करते रहे। जब कोई महापुरुष चला गया तो लोग फिर इस शिक्षा को भूल गये। फिर कोई महात्मा आया और इस तालीम को फिर ताज़ा कर गया। दुनिया बारबार भूलती रही। महापुरुष बार-बार इस तालीम को ताज़ा करते रहे। इस विज्ञान के जानकार कहो, बड़े भारी Giant (पहलवान) कहो, वह हमारे हुजूर थे, (श्री हुजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज), जिनके श्री चरणों में बैठने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ और जिनकी यादगार में यह सब यहाँ बैठे हैं। यह कोई नई साईंस नहीं। पुरातन से पुरातन और सनातन से सनातन है यह तालीम। यहाँ समाजों का झगड़ा नहीं। यहाँ Self analysis का, जड़ से चेतन को अलग करने, आत्मा का मन इन्द्रियों से अलग करके अपने आप को जानने का, Self knowledge का और God knowledge का, प्रभु को पहचानने का सवाल है। किसी अनुभवी पुरुष की संगत में बैठ कर यह गुत्थी सुलझाई जा सकती है। जिसने इस विद्या को पाना है उसे चाहिए कि ऐसे अनुभवी महात्मा की तलाश करे। दुनिया ऐसे महापुरुष से कभी खाली नहीं रही है। Demand and supply (डिमांड-सप्लाई) नियम अटल है और रहेगा।

Guru appears when the chela is ready. जहाँ आग जलेगी वहाँ Oxygen (ऑक्सीजन गैस) बे अख्तियार मदद को आएगी। यह प्रकृति का नियम है। प्रबल इच्छा हो मन में, उससे मिलने की, तो मालिक दिल की पुकार सुनता है। वह क्या करता है ? वह अपने से मिले हुए किसी महापुरुष को मिला देता है। महापुरुष हमारी तरह चलते-फिरते, खाते-पीते नज़र आते हैं। वह सादा लिबास में रहते हैं। कोई बनावट नहीं बनाते। न कोई भेष रखते हैं। सादा जीवन बसर करते हैं। बाहर से कोई उनकी बड़ाई का अन्दाज़ा नहीं लगा सकता, जैसे मसीह की मिसाल आई। किसी ने कुछ कहा — किसी ने कुछ, मगर एक साईमन (Simon)

था जिसने कहा कि तू जीते जागते परमात्मा का बच्चा है। जो अनुभवी हैं, वह ऐसे महापुरुषों को पहचान लेते हैं। दशम गुरु श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज के जीवन की एक घटना है, जब वह जिस्म में आए। एक पीर साहिब कभी किसी तरफ और कभी किसी तरफ सीस नवाया करते थे। एक दिन उस तरफ सीस नवाने लगे जहाँ दशम गुरु साहब थे। लोगों ने पूछा ''आज आप इस तरफ क्यों सजदा कर रहे हैं ?'' पीर साहब ने फरमाया कि आज नूर इस तरफ नज़र आता है। सवाल तो नूर का है। जहाँ नूर हो वहाँ परवाने ज़रूर आएंगे। हमारे हज़ूर की बाहरी सूरत की भी निराली शान थी। हज़ारों में बैठे हुए अलग दिखाई देते थे। जिसने एक नज़र देखा वह हज़ार जान से फिदा हो गया। इतना तो हर एक आदमी कह देता था कितना शरीफ इंसान है। जब ज़रा कसीबी सम्बन्ध पैदा होता तो वह कुछ और भी नज़र आते। मौलाना रूम फरमाते हैं -

वली अल्लाह रा बरकियासे खूद मगीर, दर नविश्तन यकसाँ आयद शेरो शीर।

अर्थात् परमात्मा के प्यारों को अपनी तरह इंसान न समझ। जैसे लिखने में शेर और शीर एक ही तरह लिखे जाते हैं, मगर दोनों में बड़ा फर्क है। एक फाड़ कर खा जाने वाला जानवर है, दूसरा आधार देने वाला दूध। तो जिस जिस का जैसा ताल्लुक उनके साथ रहा, उसने उसी रूप में उन्हें देखा।

शुनीदा अम के तुरा अज हजार दीद बसे,
वले आँ चुनाँ के तुई आं चुनाँ न दीद कसे।

अर्थात् सुना है कि हज़ारों लाखों इन्सानों ने तुझे देखा, लेकिन जैसा तू है, उस रंग में किसी ने नहीं देखा। उन हज़ारों देखने वालों में कितने थे जिन्होंने साईमन (Simon) की तरह उसे ज़िन्दा खुदा के बच्चे के रूप में देखा।

हज़ूर को भी कई कहते यह बड़ा आलम है। कई उन्हें दुनियादार कहते। हज़ूर फरमाया करते थे कि अगर मुझे गृहस्थी House-holder के रूप में देखना हो तो जाओ सरसे— अगर मेरी फकीरी देखनी हो तो वह डेरे में आ जाये। वह हर पहलू से मुकम्मल थे। इल्मीयत (विद्या) के लिहाज़ से उन्हें बड़ा शौक था। उन्होंने वह ग्रन्थ इकट्ठे किये जो लिखत में तो मौजूद थे लेकिन प्रिन्ट में, छपने में, न आए थे। लोगों ने उन्हें दबा कर रखा हुआ था। जब लोग समझते हज़ूर आराम कर रहे होंगे उस समय वह स्वाध्याय कर रहे होते। किसी भी महात्मा की बाणी हो वह उसका

स्वाध्याय करते। फिर उन्होंने उस हक़ीकत को पाया था जिसकी दुनिया को तलाश है। जो उनके पास गया वह उस भेद को पा गया। West में पश्चिमी मुल्कों के लोगों ने भी उनसे परमार्थ का लाभ हासिल किया। डाक्टर जानसन थे। जब वह आये मैं भी वहाँ मौजूद था। कहने लगे, '' पहले मैं मिशनरी बन के यहाँ उपदेश देने आया था, अब मैं उपदेश लेने आया हूँ।'' बाद में उसने Path of the Masters किताब लिखी। अच्छी किताब है।

हजूर ने 90 साल की उम्र पाई। Ripe old age थी उनकी। दुनियादारी के लिहाज़ से भी काफी तजुर्बाकार थे। दुनियावी कामों में जो सलाह देते वह पुख्ता सलाह होती, पन्सेरी। दुनिया का सर्द और गर्म देखे हुए थे। ऐसी हस्ती थे। यह महापुरुष जब आया करते हैं तो कैदियों के बीच में कैदियों की शकल बनाकर आते हैं। उनका खास Mission है। अपना काम है उनका। यह भी नौकरी है जैसे बाहर की नौकरी होती है। वह काम है जीवों को चिताना। लोग बुरा भला भी कहते हैं उन्हें। कहीं फूल मिलते हैं कहीं पत्थर। उन्होंने जो पाया मालिक की याद में उसे लोगों में बाँटते और लुटाते फिरते हैं। उनके पास हर समाज के लोग जाते हैं। सत्गुरु की तारीफ भी यही की गई है।

सत्गुरु ऐसा जानिए, जो सबना लए मिलाये जियो ॥

वह सबको मिलाकर बैठता है। वह यह नहीं देखता कि यह कौन है। हमारे यहाँ गलती क्या है ? जहाँ खास खास समाजों के इकट्ठा होते हैं वहाँ उसी समाज के लोग जमा होते हैं। किसी दूसरी समाज का आदमी नहीं जाता। इन सत्स्वरूप हस्तियों के पास सब समाजों के लोग आते हैं। श्री हज़ूर बाबा सावनसिंह महाराज के पास भी हर समाज के लोग आते थे। उन्हीं की हिदायत के अनुसार रूहानी सत्संग में ऐसी साँझी जगह एक जेसी Common ground बनाई गई है, जहाँ सब समाजों के भाई मिलकर बैठ सकें। हज़ूर से एक बार पूछा गया कि महाराज आप कौन हैं ? आप की जाति क्या है ? आपने फरमाया, ''परमात्मा हिन्दू है तो मैं हिन्दू हूँ, वह मुसलमान है तो मैं मुसलमान हूँ। आत्मा की वही जात है जो परमात्मा की जात है, ''कहो कबीर एह राम की अंश।'' ऐसे महापुरुष दुनिया में क्यों और कैसे आते हैं ? जब हमारे दिल में प्रभु को पाने की ज़बरदस्त तड़प पैदा होती है, हम उसे देखना चाहते हैं। हमारी वह आँख बनी नहीं जिससे वह नज़र आता है। उसे देखें कैसे ? अब वह हस्ती जिसके अन्तर में मालिक प्रकट है, जो

Mouth-piece of God बन चुका है, उसे देखकर हमें मालिक की झलक मिलती है। वह महापुरुष जिसके बारे में कहा गया है कि 'गुफताये ऊ गुफताये अल्लाह बवद। गरचे अज हलकूमे अबदुल्ला बवद।' अर्थात् उसका कहा हुआ परमात्मा का कहा हुआ है अगरचे आवाज़ इन्सानी गले से आ रही है, या 'जैसे में आवे खसम की बाणी तैसा करि ज्ञान वे लालो, और कहा है -

नानक दास बुलाया बोले ॥

ऐसे अनुभवी महापुरुष मन बुद्धि के घाट पर बात नहीं करते। अन्तर में जो धारा चली आती है, बग़ैर सोचे समझे, उसके आधार पर बोलते चले जाते हैं। Emerson कहता है कि बिना सोचे समझे जो खयालात आप से आप चले आते हैं, हमेशा मुकम्मल होते हैं। They are always perfect. अनुभवी पुरुष जो देखता है, वही कहता है। उसके सामने सारा मज़मून Cut and dried चला आ रहा है। आलिम सोचता है कि अब यह कहूंगा, अब वह कहूँगा। इस तरह बोलने में घंटा भर में दिमाग बिल्कुल थक जाता है। अनुभवी पुरुष का सबसे प्यार होता है। परमात्मा सब का प्रतिपालक है। वह रब्बुल आलमीन (दुनिया का परमात्मा) है। न रब्बुल मुसलमीन न रब्बुल मोमनीन। आत्मा परमात्मा की अंश है, इसलिए वह सबसे प्यार करते हैं। उनकी नज़र में सब इन्सान आत्मा देहधरी हैं। आज वह दिन है जब उस महापुरुष ने, जिसके चरणों में बैठना मुझे नसीब हुआ और जिनकी यादगार में आज हम सब बैठे हैं, यह जिस्म का चोला छोड़ा। उनकी यादगार मनाने का सबसे अच्छा तरीका क्या है ? कि जो उसने सिखाया, पढ़ाया, समझाया, जिस जीवन को उसने पाया, उसे समझकर हम भी उसे पाने का यत्न करें। यसु मसीह जब चोला छोड़ने लगे तो शिष्यों को बुलाकर उन्हें ताकीद की कि अपने Divine link को जो अन्तरगत है, जब तक पा न लो सब काम छोड़ दो। फरमाया ''मेरे शिष्यों, मेरी आखिरी हिदायत यही है तुम्हें कि जो वस्तु अन्तर में है, उसे जब तक पा न लो बाकी सब काम छोड़ दो।'' हज़ूर की बीमारी के दिनों में मेरी यह Duty लगी हुई थी कि हज़ूर जो बात कहें, वह हिदायत, संगत को पहुँचा दूँ, और संगत की बात हज़ूर तक पहुँचा दूँ। एक बार भरी संगत में फरमाया कि परमार्थ के बारे में जो कुछ पूछना है इससे (श्री कृपालसिंह जी से) पूछ लेना यह सब मुझसे पूछ लेगा। मुझसे फरमाया ''संगत को मेरा यह हुक्म सुना दो कि रात दिन सिमरन कर लो। इससे मुझे ठंडक और खुशी होती है।'' मतलब क्या था ? कि मैं तो जा रहा

हूँ। जो कीमती समय नसीब है तुम्हें, उसका फायदा उठा लो। अगर अब तक कुछ नहीं किया तो अब सिमरन कर लो। किसी महापुरुष के साये में बैठकर अभ्यास करना मज़बूत किले में बैठकर मेहनत करना है। घर में जो मेहनतें की जाती हैं उससे जो हासिल नहीं होता, वहाँ सहज में ही हो जाता है। यह उस मण्डल का असर है। यही बात यसू मसीह ने कही कि जब तक वह चीज़ जो अन्तर में है उसे तुम पा न लो कोई काम न करो। हज़ूर ने भी यही कहा कि उनसे कहना कि अब तो सिमरन कर लें।

जब हमारे मन में सच्ची खाहिश पैदा होती है, तड़प पैदा होती है मालिक के मिलने की, तो हम उसे देखना चाहते हैं। जब तक यह इन्द्रियों के घाट पर जिस्म का रूप बना बैठा है, पिण्ड से ऊपर नहीं आया, तब तक वह यही चाहता है कि वह प्रभु प्रीतम इन्हीं चमड़े की आँखों से नज़र आए। भक्त चाहता है कि वह भगवान को पाये। वह प्रभु अति सूक्ष्म और अगम है। जब तक हम उतने ही सूक्ष्म और अगम न हो जाएं हम उसे देख नहीं सकते। अब हवा है। हमें इसमें कुछ भी नज़र नहीं आता है। पर क्या सचमुच हवा में कुछ नहीं ? Microscope (खुर्दबीन) लगा कर देखो तो हवा में अनगिनत कीड़े नज़र आते हैं। हैं तो वे अब भी, पर हमें दिखाई नहीं देते। Microscope के द्वारा वह हमारी आँख की Range में आ जाते हैं और इस तरह हम उन्हें देख लेते हैं। हमने प्रभु को पाना है। सब महात्माओं ने यह आदर्श मनुष्य के सामने रखा है। मनुष्य जीवन 84 लाख योनियों की सरदार योनी है। इसमें हमने अपने आप को जानना और प्रभु को पाना है। अपनी अपनी समाजों में रहो। जिस समाज में तुम रहते हो वह समाज तुम्हें मुबारक। समाजों का दाई का काम है, जो आप बच्चा नहीं जनती, उसे जनाने में सहायक होती है। समाजों के रस्म रिवाज, अपसविद्या के साधन, ज़मीन की तैयारी है परमार्थ के लिए। समाजों से काम ले लो और फिर अपना असली काम, मुनष्य जीवन का जो मुख्य आदर्श है, उसे पूरा कर लो। वह क्या है ? अपने आप को जानना (Self Knowledge) और प्रभु को पहचानना (God Knowledge)। तो जिस हृदय में ज़बरदस्त खाहिश पैदा होती है प्रभु को पाने की, वह चाहता है कि मैं उस प्रीतम को अपनी आँखों से चलता फिरता देखूँ। इन्सान की यह खाहिश, यह सच्ची तड़प उभार पैदा करती है, मालिक के समुद्र में, कि वह इन्सानी शकल में इज़हार करे, मनुष्य के रूप में विकास करे। इकबाल का शेर (दोहा) है -

कभी ऐ हकीकते मुस्तरिद, नज़र आ लिबासे मजाज़ में।
के हजारों सिजदे तड़प रहे हैं, मेरी जबीने नयाज में।

वह जो छुपी हुई हकीकत है, जिसे हम इन नज़रों से देख नहीं सकते, वह हमारी तरह इन्सानी शकल में नज़र आए कि ''हजारों सिजदे तड़प रहे हैं'', हर सैकण्ड सिजदे हो रहे हैं, प्रार्थना हो रही है कि वह सामने आकर हमें दिखाई दे। वह मालिक अति सूक्ष्म और अगम है। जब तक यह (मनुष्य) उतना ही सूक्ष्म और अगम न हो जाए, यह उसे देख नहीं सकता। जब तक वह जिस्म में कैद है, वह उस प्रभु को अपने लैवल (level) में, इन्हीं आँखों से देखना चाहता है। बच्चे की यह इच्छा माता को, उस प्रभु को इन्सानी पोल Pole पर इज़हार करने पर मज़बूर कर देती है, उसे खेंच कर किसी इन्सानी पोल Pole पर इज़हार कराती है। उस इन्सानी पोल Pole को महात्मा कह लो, सन्त कह लो।

माना कि तू खिलवत कदए दिल में हैं मकीं,
मगर सामने आ के तू बैठ जा के नज़र को खूए मजाज़ है।

''हम मानते हैं कि तू घट-घट में बैठा है। मगर हम तुझे सामने देखना चाहते हैं। तू सामने आ कर बैठ जा ताकि हम तुझे देख के आंख ठण्डी कर सकें।'' भक्त की यह इच्छा भगवान को मज़बूर करती है कि वह किसी इंसानी Pole पर इज़हार करे। उस Pole का नाम साधु, सन्त, महात्मा है। वह Polarised God (सदेह प्रभु) है। वैसे तो वह हर जगह मौजूद है। यह न कहो कि वह कहीं है कहीं नहीं। वह हर इंसान में है। घट घट व्यापी है वह। मगर कहीं वह प्रकट है, कहीं Latent (गुप्त) है।

सब्बों घट मेरे साईंयां, सुंजी सेज न कोय॥
बलिहारी सित घट के, जौं घट परगट होए॥

वह सब में है, पर जिस जिस घट में वह प्रकट है, हम उस पर बलिहार हैं। हम ऐसे अनुभवी पुरुष के पास क्यों जाते हैं ? कि महाराज आपके अन्तर तो वह मालिक प्रकट है। है हमारे अन्तर भी, पर हमारे अन्तर वह गुप्त है, क्योंकि हमारी आत्मा मन के अधीन है, मन आगे इन्द्रियों के आधीन है और हमारी आत्मा इन्द्रियों के घाट पर बाहर फैल रही है। अब हम कैसे बाहर से हटें और अन्तर्मुख हों ? जब तक हमारी वह आंख नहीं बनती हम उसे इन्हीं आँखों से देखना चाहते हैं। हम कहते है कि हम इतने ऊंचें नहीं आ सकते जहाँ तुम हो। हम तो, इसी समय, यहीं

देखना चाहते हैं तुम्हें। हम चाहते हैं कि हमारी तरह, हे भगवान, तुम मल मूत्र का थैला लेकर आ जाओ कि हम तुम्हें देखकर आँख ठण्डी कर सकें। हमारे जैसा कोई इन्सानी Pole बने जिस पर तेरा इज़हार हो रहा हो। उसके देखने से शौक बनता है। वह Polarised God (सदेह ब्रह्म) है। Mouthpiece of God है, अर्थात उसके द्वारा वह मालिक बोल रहा है।

गुफ्ते ऊ गुफतये अल्लाह बवद, गरचे अज़ हलकूमे अब्दुल्लाह बवद।

अर्थात उसका कहा हुआ मालिक का कहा है, अगरचे आवाज़ इंसानी गले से आ रही है। जिसने आत्म-तत्व का बोध कर लिया, जिसने अपनी आत्मा को तन मन से आज़ाद करके उसे जान लिया और प्रभु को पहचान लिया, वह उस मालिक के विकास की जगह है। वह वली अल्लाह है। मौलाना रूम फरमाते हैं—''जो वली अल्लाह (आत्मतत्व दर्शी महात्मा) के करीब (निकट) आ गया समझो वह परमात्मा के करीब आ गया, जो उससे दूर हो गया समझो वह परमात्मा से दूर हो गया।'' क्यों ? वह मालिक उस Pole में Contacted (जुड़ा) है। वह इन्सानी जिस्म एक ऐसा बिजली का खम्बा है, जो प्रभु रूपी पॉवर हाउस (बिजली घर) से जुड़ा हुआ है। वह मालिक, है हम में भी, मगर प्रकट नहीं, गुप्त है, इज़हार में नही आ रहा। हम उसके पास (अनुभवी महापुरुष के पास) इसलिए जाते हैं कि वह मालिक हमारे अन्तर भी प्रकट हो जाए। ऐसे महात्मा के पास जब हम पहुँच जाते हैं तो हम प्रभु के पास पहुँच जाते हैं, उससे हमें मालिक की झलकें मिलती हैं। यदि हम उससे दूर हो जाएँ तो हम उस मालिक से दूर हो जाते हैं। यह जो भक्त की इच्छा है भगवान के पाने की, उसे सामने देखने की, यह कुदरती खाहिश है। जब उसको पाने की प्रबल इच्छा जाग उठती है तो वह भगवान से यही माँगता है कि हे, भगवान, कोई ऐसा pole हमें दे दे जिसमें तू प्रकट है। यही सब महात्माओं की खाहिश रही है। श्री गुरु रामदस जी फरमाते हैं -

रामा हम दासन दास करीजै ॥

कि हे प्रभु हमें उन महापुरुषों का दास बना दे जो तेरे दास हैं। यह उनकी इच्छा है जिनके अन्तर में मालिक के मिलने की तड़प पैदा हो चुकी है। हम किसके दास हैं ? हम तो स्त्री के, बाल-बच्चों के, रिश्तेदारों के, समाजों और कौमों के दास हैं। श्री गुरु रामदास जी प्रार्थना करते हैं कि हे मालिक, हमें किसी ऐसे का दास बना दे

जो तेरा दास है। कब तक ? फरमाते हैं जब तक मेरे सांस चलते हैं उस वक्त तक मैं उसके चरणों में पड़ा रहूँ। यह कुदरती खाहिश है भक्त की, कि अन्त समय उसकी गोद में मेरा सिर हो। मनुष्य जाति की इस अन्तरी खाहिश की, मनुष्य जाति की दुख भरी प्रार्थना की, रौएं (धाराएँ) चलती तो प्रभु सुनता है। वह सामान करता है, किसी ऐसे को मिलाने का, जिसे आत्म तत्व का बोध हो चुका है। ऐसे समय में ऐसे महात्मा संसार में आते हैं। प्रभु को मनुष्य के चोले में चलता फिरता देखने की खाहिश क्यों पैदा होती है मनुष्य के हृदय में ? हमजिन्सियत (अपने जैसे शरीरधारी से लगाव) स्वाभाविक गुण है। कथा आती है कि श्री कृष्ण गोकुल छोड़ किसी दूसरे शहर गए और बहुत समय तक वहाँ से वापस न लौटे। उनके बिरह में गोपियाँ बड़ी व्याकुल थीं। कृष्ण ने ऊधो को भेजा कि गोपियों को ज्ञान ध्यान की बातें सुना कर उन्हें समझा आओ। वह गये। गोपियों से ज्ञान की बातें की। वे चुपचाप सुनती रहीं। जब अपनी कह चुके, तो गोपियों ने कहा कि जो बातें तुम कहते हो, वह सची हैं नारायण, पर जिसके मन में उसे देखने की प्रबल इच्छा है, जो उसके दर्शन पाने के लिए तड़प रहा है, वह बातों से क्या बहलेगा। जो देखने के लिए पागल हो रहा है, उसका क्या इलाज है तुम्हारे पास ? ऊधो अपना मुँह लेकर वापस लौट गए। भक्त की यह स्वाभाविक इच्छा होती है कि वह उसे देखना चाहता है। भक्त की इस इच्छा की पूर्ति के लिए ऐसे Contacted (मालिक से जुड़े पुरुष) Chosen few (चुने हुए महापुरुष) संसार में आते हैं। वह नूर (प्रकाश) के बच्चे होते हैं। जब आते हैं सबको नूर दे जाते हैं। ऐसे महापुरुष आते हैं, आते रहे और आते रहेंगे। उनका उपदेश क्या है ? वह कहते हैं -

"मनुष्य योनी बड़े भागों से मिली है। 84 लाख योनियों की यह सरदार योनी है। इसमें सब से बड़ा काम जो करना है, वह प्रभु को पाना है। पहले अपने आप को जानना, क्योंकि अपने आप को जानने के बिना हम प्रभु को नहीं जान सकते, फिर उस प्रीतम (प्रभु) के दर्शन करना। इसी मुनष्य योनि में तुम यह काम कर सकते हो। क्योंकि प्राणीमात्र में मनुष्य ही Discrimination (विवेक) सत्य असत्य का निर्णय करके, असत्य का त्याग और सत्य को ग्रहण कर सकता है। वह महापुरुष जो सत्पद को प्राप्त कर चुका है, वह Base है सत् की प्राप्ति का। ऐसे की संगत में ही सत् को पा सकते हो। ऐसे महापुरुष दुनिया को किस नज़र से देखते हैं ? उनकी दृष्टि समाजों पर नहीं होती। उनकी नज़र से सारी मनुष्य जाति उसे प्रभु की अंश है। वह कहते हैं -

'मानस की जाति सबै एक पहिचानिबो', समाजें हमने बनाईं, वक्त की ज़रूरत के मुताबिक। इन्सान मिलजुल के रहने वाला प्राणी है। समाजों ने ऐसे कायदे कानून बना दिये कि इन्सान नेक पाक जीवन व्यतीत करे ताकि सोसाइटी में Corruption (भ्रष्टाचार) न फैले। समाजों से काम ले लो। किसी न किसी सोसायटी में रहो और उस सोसाइटी की गरज़ को पूरा करो, अर्थात् नेक पाक जीवन बसर करो। सदाचारी बनो। यह परमार्थ के लिए ज़मीन की तैयारी है। अब अगला कदम परम अर्थ को पाना, अर्थात् अपने आपको जानना और प्रभु को पाना है। जो भी महात्मा आज दिन तक आए, वह सब यही कहते रहे, अपने आप को जानो कि तुम कौन हो। तुम शरीर नहीं, शरीर को चलाने वाले हो। मौलाना रूम फरमाते हैं -

आं तुइ के बे बदन दारी बदन ॥ पर म तरसद जिस्मो जां बेरु शुदन ॥

अर्थात् तू वह है कि इस जिस्म के अलावा तेरा और भी जिस्म है, इसलिए इस जिस्म से निकलने से न डर। हमें तो मौत हव्वा दिखाई देती है। कभी जिस्म से ऊपर ही नहीं आए। जो जीते जी शरीर से ऊपर आ गया, इसे Transcend कर गया (इससे ऊपर आ गया) वह मौत से क्यों डरेगा ? कुरान शरीफ में आया है -

मौतू किबलन्त मौतू

अर्थात् मरने से पहले मर। सभी महात्मा यह आदर्श पेश करते आए हैं -

दादू पहले मर रहो, पाछे मरें सब कोय।

आखिर यह जिस्म छोड़ना है। जो भी आया दुनिया में, उसे जिस्म छोड़ना पड़ेगा। दुनिया का Eviction order (मकान खाली करने का हुकम) तो थोड़ी देर के लिए टल भी सकता है, मगर प्रभु का Eviction order आ जाए तो उसकी तामील हो के रहती है। वह टल नहीं सकता। यदि मरने से पहले मरना सीख लो, अभी अपनी आत्मा को पिण्ड से ऊपर लाना सीख जाओ, तो मृत्यु का भय कहाँ रहा ? यह एक ऐसा मज़मून है जो सबके लिए है। एक Common problem (साँझी समस्या) है। मनुष्य मात्र को इस मुत्थी को सुलझाना है। यह Man problem है। जिसने जीते जी अपनी आत्मा को मन इन्द्रियों से Liberate अर्थात् आज़ाद करके, अपने आपको जाना और प्रभु को पहचाना, उस का मनुष्य जीवन में

आना सफल है। जिस ने इन्सानी चोले में आकर यह काम नहीं किया, उस ने जन्म अकारथ खोया। वह जन्म बर्बाद करके चला गया।

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे एहला जन्म गंवाया ॥

एक बार यह मनुष्य जन्म हाथों से निकल गया तो फिर या नसीब कब यह अवसर मिले और यह इस काम को कर सके। हमें जीते जी इस गुत्थी को सुलझाना है।

चूँ जें हिस बेंरु नयामद आदमी, बाशद अज तस्वीरें गैबी अजनबी।

अर्थात् जब तक मनुष्य मन इन्द्रियों से ऊपर नहीं आता, जब तक वह जिस्म जिस्मानियत के घाट पर बाहर दुनिया में लम्पट हो रहा है, वह गैबी तस्वीर को नहीं देख सकता, अर्थात् उसे अदृश्य का ज्ञान नहीं हो सकता। वह अपने आपको नहीं जान सकता, न प्रभु को पहचान सकता है।

घट-घट में हर जू बसें, सन्तन कहयो पुकार।

वह प्रभु घट-घट व्यापी है, पर क्या हमने उसे देखा है ? हम जिस्म के बारे में, इसके ताल्लुकात के बारे में जो घर, समाज, जाति और देश से सम्बन्ध रखते हैं, बहुत कुछ जानते हैं। बुद्धि के भी हम बड़े पहलवान हैं। नए-नए विज्ञान के अविष्कार हमने किए। ग्रन्थों की व्याख्या कर डाली। बुद्धि के लिहाज़ से भी काफी तरक्की की हमने। पर शरीर और बुद्धि, यह दोनों चीजें आत्मा के आधार पर चल रही हैं। जब इस मकान का निवासी, आत्मा, इससे निकल जाए तो यह शरीर की सारी मशीनरी Stand still (रूक) हो जाती है। तो आत्मा जिसके आधार पर शरीर और बुद्धि चल रही है, उसके बारे में हम क्या जानते हैं, सिवाय इसके कि किसी धर्म स्थान पर जाकर मत्था टेक आए या किसी महात्मा की वाणी का स्वाध्याय कर लिया। हमें कोई पूछे कि परमात्मा है तो हम क्या कहते हैं ? यही कि अमुक महात्मा यह कहता है। अमुक वेद, ग्रन्थ या शास्त्र में यह लिखा है। भई यह सब ठीक है। जिन्होंने इस अनुभव को पाया, यह उनका तजुरबा है। तुम अपनी कहो। What is your experience with self & God ? आत्मा और परमात्मा के बारे में तुम्हारा अपना तजुरबा क्या है ? महात्माओं की वाणियों में जो कुछ लिखा है, वह उनके अपने निजानुभव, First hand experience का बयान है। उन्होंने

जीते जी इस अनुभव को पाया। उनके ग्रन्थों को केवल पढ़ लेने अथवा किसी धर्मस्थान पर मत्था टेकने से कल्याण नहीं होगा। जो इस आशा पर जी रहे हैं, वह भूल में जा रहे हैं। जिस चीज़ को पाना है उसे अभी पा लो, उधार न रखो।

"A bird in hand is better than two in the bush."

''एक पक्षी जो तुम्हारे हाथ में है, वह सैकड़ों पक्षियों से बेहतर है जो झाड़ियों में छुपे पड़े हैं।'' यह नकद सौदा है।

गुरू नानक साहब से जब यह सवाल पूछा गया कि क्या परमात्मा है ? तो उन्होंने क्या कहा -

'नानक का पादशाह दिसे जाहिरा।'

अर्थात् वह सामने दिखाई दे रहा है। उनकी वह आंख बन गई जिससे वह प्रभु नज़र आता है। हमारी वह आंख नहीं बनी। यसू मसीह से यह सवाल पूछा गया तो उन्होंने फरमाया -

Behold the Lord.

अर्थात् देखो वह नज़र आ रहा है। No reasoning. ~~वह कोई दलील नहीं देते।~~ हमसे पूछा जाए तो हम क्या कहते हैं ? यह कि अमुक वेद, अमुक शास्त्र यह कहता है। सूर्य समय पर उदय और अस्त होता है। जैसे घड़ी का बनाने वाला कोई है, इसी तरह As a matter of inference (अन्दाजे से) हम यह नतीजा निकाल लेते हैं, कि कोई ताकत है जिसने दुनिया बनाई। हमने उसे देखा तो नहीं ? ~~स्वामी विवेकानंद बम्बई प्रान्त में Challenge (चुनौती) देते थे कि है कोई ऐसा जिसने परमात्मा को देखा है ? अनुभवी और विद्वान में बड़ा अन्तर है। बड़ा फर्क है पराविद्या और अपराविद्या में। अपराविद्या वाले बुद्धि विचार से, As a matter of inference अर्थात् अन्दाज़े से नतीजा निकालते हैं किसी बात का। अनुभवी आंखों से देखकर बयान करता है। दोनों के बयान में बड़ा फर्क है।~~

मेरा अपना तजुरबा है। पाकिस्तान बना तो उन दिनों लोगों पर बड़ी मुश्किलें पड़ी। कइयों के रिश्तेदार मारे गये। कई ऐसे थे जिनके घर बार लुटे गये। एक भाई थे जो बड़े प्रचारक थे। वह और उनकी पत्नी, दोनों गली-गली, घर-घर लोगों को

आस्तिकता का उपदेश देते फिरते थे। पाकिस्तान के दिनों में हर एक पर, हिन्दु हो या मुसलमान, सब पर मुसीबत आई। उस भाई पर भी आई। अभी कुछ ही महीने हुए इस बात को कि वह भाई मेरे पास आए। मुझसे पूछने लगे, ''सच सच बताओ क्या वास्तव में ईश्वर है ?'' वह भाई प्रचारक थे। आस्तिकता का उपदेश देना, परमात्मा की चर्चा करना, उनका सात-दिन का काम था। पर अपनी आंखों से उन्होंने देखा नहीं था। देखने वालों की बात और है, न देखने वालों की बात और है। कबीर साहब के पास ऐसे ही वाचक ज्ञानी पण्डित बहस करने आ गए तो कबीर साहब ने यही कहा -

मैं तो कहता आंखन देखी, तू कहता कागद की लेखी।
तेरा मेरा मनुवा कैसे इक होइ रे ॥

कि तुम किताबों को Quote कर रहे हो, ग्रन्थों के हवाले देते हो। तुमने अपनी आंखों से तो नहीं देखा उस हकीकत को। जिसने अनुभव किया है, वह देखकर कहता है। मौलाना रूम के पास भी एक पढ़े लिखे वाचक ज्ञानी बहस के लिये पहुंच गये तो उन्होंने फरमाया -

''अगर तू आधी रात का सूर्य देखने वाला है तो मुझसे बात कर, वरना मेरा वक्त जाया न कर।''

पूछने वाले ने पूछा कि क्या वह सूर्य सात को ही दिखाई देता है, दिन को नहीं। मौलाना रूम ने फरमाया कि वह सूर्य हर वक्त दिखाई देता है, मगर उसे वही देख सकते हैं जिनकी रूहें पाक (पवित्र) हैं। इल्मे सीना (पराविद्या) और चीज़ है। इल्मे सफीना (अपराविद्या) और चीज़ है। दोनों में बड़ा फर्क है। गुरू नानक साहब के जीवन का भी ऐसा ही वृतान्त आता है। इतिहास में आया है कि एक बार, आधी रात के समय, आपने फरमाया ''सूरज चढ़ा हुआ है।'' वह सूर्य, वह Light of God (परमात्मा का प्रकाश) वही देख सकते हैं जिनकी आंख खुली है, कोई दूसरा नहीं देख सकता। घर वालों ने गुरू नानक साहब की यह बात सुनकर यह समझा कि बुढ़ापे के कारण, अक्ल खराब हो गई है। भाई लेहना आंख वाले थे, जो बाद में गुरू अंगद कहलाए। उनसे पूछा, तो वह बोले। ''हां महाराज सूर्य चढ़ा हुआ है, जितना आपने चढ़ाया है।'' एक ही चीज़ सबने देखी। हकीकत तो एक है। हज़ूर (श्री हज़ूर बाबा सावनसिंह की महाराज) की बीमारी के दिनों की बात है। एक बार

रात के समय आपने फरमाया, ''बड़ा भारी प्रकाश हो रहा है सूर्य का, लाल रंग का। जो लोग जालन्धर में हैं क्या वह भी इसे देख सकते हैं।'' घर वालों ने समझा कि बीमारी में दिमाग खराब हो गया है। संसार का माना हुआ जो होम्योपैथ था, उसने फतवा दे दिया कि हजूर को Uraemia (पेशाब की बीमारी जिसमें ज़हर दिमाग को चढ़ जाता है।) हो गया है, जिसका प्रभाव दिमाग पर पड़ा है। मैं हज़ूर के चरणों में पहुंचा तो बड़ा हंसे। मुझसे भी वही सवाल पूछा। मैंने अर्ज़ किया जालन्धर वाले तो क्या, जो भी जिस्म से ऊपर आएगा, इसे Transcend करेगा, चाहे वह अमरीका में बैठा हो, वह इस प्रकाश को देखेगा।'' हुजूर ने फरमाया, ''तूने ठीक जवाब दिया है।''

सो पराविद्या और अपराविद्या में बड़ा फर्क है। दुनिया अधिकतर अपराविद्या में पड़ी है। अपराविद्या वाले भी ठीक प्रचार करें तो संसार में सब सुख चैन हो जाये। गलत प्रचार के कारण हर जगह काशमकश फैली हुई है। करना क्या था और हम कर क्या रहे हैं। जैसे कोई स्कूल हो। बड़ी सुन्दर इमारत हो उसकी। फरनीचर भी बढ़िया हो उसका, पर कोई लड़का वहाँ पास ही न होता हो तो बताओ क्या फायदा ऐसे स्कूल का ? सोने की घड़ी हो। जवाहरात लगे हों। ठीक वक्त ही न बताए वह घड़ी, तो क्या फायदा उसका ? एक कुआँ हो। पक्का चबूतरा बना हो। बड़े आलीशान बाथरूम (स्नान गृह) बने हों उस पर। मगर कुएँ से पानी ही न निकलता हो, तो बताओ ऐसे कुएँ का क्या फायदा ?

यह समाजें इसलिए बनाई गई थीं कि इन्सान पूर्ण इन्सान बने। To turn out perfect men. Man making अर्थात् इन्सान बनाने का आदर्श तो किनारे रह गया। हम समाजें बनाने में लग गये। नतीजा क्या निकला ? आपस की कशमकश और धड़ेबन्दी। Clash between class and class. इस कशमकश का परिणाम था कि पाकिस्तान बना और अभी मालूम नहीं कितने 'स्तान' और बनेंगे ?

पूर्ण पुरुष दुनिया को समाजों की नज़र से नहीं देखते। वह हक़ीकत की तरफ देखते हैं।

सैकड़ों आशिक हैं, दिलाराम सबका एक है।
मजहबो मिल्लत जुदा हैं, काम सबका एक है॥

सब समाजों का एक ही आदर्श है कि लोग नेक पाक जीवन व्यतीत करें, सदाचारी बनें, इन्सान इन्सान के काम आए ताकि मनुष्य जीवन की यह संसार

यात्रा आराम से कट जाए, और फिर अपने आपको जानना और प्रभु को पाना जो मनुष्य का मुख्य उद्देश्य है। हमने असली काम को तो किनारे रख दिया और इधर-उधर के कामों में उलझ के रह गये।

हाफिज़ साहब भी यही कह रहे हैं -

यक हक़ीकत जल्वागर दर कुफ्रो इस्लामस्तो बस।
इखतलाफाते मजाहब जुमला औहामस्तो बस।

अर्थात् काफिरों और मोमिनों (नास्तिकों और आस्तिकों) मनमुखों और गुरुमुखों, डाकुओं और भक्तों के अन्तर में एक ही हक़ीकत काम कर रही है। दोनों में, अर्थात् मनमुखों और गुरुमुखों, डाकुओं और भक्तों में अन्तर केवल इतना है कि वे बाहर फैलाओ में जा रहे हैं और यह (भक्त, ज्ञानी) अन्तर्मुख लीन हो रहे हैं। यह बाहर समाजों के भेद-भाव हम लोगों के वहमों का नतीजा है। अनुभवी पुरुषों की यह तालीम नहीं। एक अनुभवी पुरुष आए। जब वह रहे, दुनिया उनकी तालीम का सही मतलब Right import समझती रही। जब वह चले गए, शेख और ब्राह्मण के प्याले जुदा हो गए। वह क्यों ? तास्सुब और तंगदिली के कारण।

अज तास्सुब कासए शेखो बिरहमन शुद जुदा।
वरना दर मैखाना यक साकी ओ यक जामस्तो बस।

अर्थात् तास्सुब और तंगदिली के कारण शेख और ब्राह्मण के प्याले जुदा हो गये, वरना एक ही साकी (पिलाने वाला) है, नाम या शब्द की शराब पिलाने वाला, और वही नाम की शराब चल रही है। ऐसा अनुभवी पुरुष, जिसने प्रभु को देखा है, उसे देख कर हमें भी प्रभु के होने का यकीन हो जाता है। ठीक उसी तरह जैसे पहलवान की सूरत देखकर ताकत का यकीन हो जाता है। विवेकानन्द थे, बम्बई प्रान्त में लोगों को Challenge (चुनौती) देते फिरते थे, कि है कोई ऐसा जिसने प्रभु को देखा है ? उन दिनों कलकत्ते में परमहंस स्वामी राम-कृष्ण अनुभवी पुरुष रहते थे। इल्मे सीना (पराविद्या) और है, इल्मे सफीना (अपराविद्या) और है। इल्म (विद्या) आमिल (अनुभवी पुरुष) के गले में फूलों का हार है, नहीं तो गधे का बोझ है। विवेकानन्द जी स्वामी राम-कृष्ण के पास गए। यह लोग कोई खास बनावट या भेष नहीं रखते। Acting, posing अर्थात् स्वांग रचना से काम नहीं

लेते। वह सादा जीवन बसर करते हैं। विवेकानन्द वहां गए और पूछा -

"Master, have you seen God ? "

महात्मा, आपने परमात्मा को देखा है ?

परमहंस ने जवाब दिया।

"Yes my child, I see him just as I see you, even more clearly than that."

''हाँ बच्चा, मैं उसे देख रहा हूँ जैसे मैं तुम्हें देख रहा हूँ बल्कि इससे भी ज्यादा सफाई के साथ।'' यह सुनकर विवेकानन्द का सिर नीचा हो गया हमेशा के लिए। बाद में उन्होंने West (पश्चिमी देशों) में अपने भाषणों में कहा -

"But for that God-man I was ruined"

अर्थात वह पूर्ण पुरुष न बचाता तो मैं डूब गया था। ऐसे महापुरुषों के पास हम क्यों जाते हैं ? उस अनुभव के लिए जिसकी हमें तलाश है और जिसे यह पा चुका है ? सबसे बड़ा मज़हब, सबसे ऊँचा धर्म हमें क्या सिखाता है ? यही कि सारी मनुष्य जाति एक है -

आई पन्थी सकल जमाती, मन जीते जग जीत ॥

आई पन्थ योगियों में सबसे ऊँचा पन्थ गिना जाता है। पूर्ण पुरुषों की नज़र में सबसे ऊँचा धर्म क्या है ? कि सारे मनुष्य आत्मज्ञान को पाने के एक ही स्कूल में पढ़ रहे हैं, और वह सब आपस में सहपाठी हैं। दूसरी बात यह कि यदि तुम अपने मन को जीत लो तो सारी दुनिया को जीत लोगे। यह दो बातें दुनिया के सारे धर्म सिखाते हैं। यह करते हुए अन्तर में अपने आप को जानना और प्रभु को पाना, यह है पूर्ण पुरुषों के उपदेश का सार।

इस ज्ञान के माहिर कहो, बड़ा भारी Giant (पहलवान) कहो, इस ज़माने में, वह हमारे हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज थे, जिनके चरणों में बैठना मुझे नसीब हुआ और जिनकी यादगार में हम सब यहाँ बैठे हैं। कल शाम, आज सुबह और अब इस वक्त की बातचीत में, उस तालीम का Digest (निचोड़) पेश किया गया है, जो उनके चरणों में बैठ कर मुझे समझ आई। साथ ही उस महापुरुष की

याद भी ताजा होती रही। अब हम लोगों को जिन्हें उस महापुरुष के चरणों में बैठना नसीब हुआ है, क्या करना चाहिए ? पहली बात यह है कि हम सब भाई परस्पर प्रेम प्यार से रहें। आपस में हमारा दिली प्यार होना चाहिए। आपको याद होगा, मजनूं था। एक दिन लोगों ने देखा कि वह एक कुत्ते का पाँव चूम रहा था।

पाए सग बोसीद मजनूं खल्क गुफता ईं चे बूद

लोगों ने उसे कुत्ते के पांव चूमते देखा तो पूछा कि यह क्या कर रहे हो ? मजनूं ने जवाब दिया -

के ईं सग गाहे-गाहे दर कूए लैला रफतन्द

अर्थात यह कुत्ता कभी-कभी लैला की गली में जाता था, इसलिए मैं इसके पाँच चूम रहा हूँ। लैला मजनू को बड़ी प्यारी थी। एक बार मजनूं से किसी ने कहा, ''मजनूं खुदा तुझ से मिलना चाहता है।'' मजनूं बोला ''यदि वह मुझसे मिलना चाहता है तो लैला बन के आए।'' लैला जहाँ जहाँ चलती थी, मजनूं उसकी चरण धूलि को सीस निवाता था। अगर एक मजनूं लैला के प्यार की खातिर कुत्ते का पाँव चूम सकता है तो हम ऐसे महापुरुष के चरणों में जाने वाले लोगों के पाँव की मिट्टी माथे पर क्यों न लगाएंगे। तो पहली बात यह है कि हम जो उस महापुरुष का नाम लेते हैं, हमारा आपस में दिली प्यार होना चाहिए। दूसरी बात यह है कि जो सबक उसने हमें सिखाया था, जो युक्ति Self analysis (आत्मानुभव) की उसने पिण्ड के ऊपर आकर अपने आप को जानने की जो Practical (अमली) तालीम हमें उन्होंने दी, उसे हम याद करें, उसका अभ्यास करें। जीते जी पिण्ड से ऊपर आ गए तो मौत का भय कहाँ रहा। Saint Plutarch (सन्त प्लूटार्क) कहता है कि मरते समय इन्सान को जो तजरबे होते हैं, वही सारे तजरबे अभ्यास करके पिण्ड को छोड़ने में जीते जी हासिल होते हैं, उन लोगों को जिन्हें अन्तमुर्ख होने का भेद मिल चुका है अथवा Plutarch के शब्दों में Those who are initiated into the Mystery of the beyond.

पिण्ड से ऊपर आना परमार्थ का पहला कर्म है। परमार्थ असल में वहीं से (पिण्ड से ऊपर आकर) शुरू होता है। इसलिए कहा है -

"Where the world's philosophies end, there the religion-starts."

ऐसे महापुरुष सबको मिला के बैठते हैं। सत्-स्वरूप हस्ती की तारीफ भी यही है -

सत्गुर ऐसा जानिये जो सबनां लये मिलाए जियो ॥

ऐसे महापुरुषों के पास हर समाज के लोग जाते हैं। वह हर एक से कहते हैं तुम जिस समाज में रहते हो वह समाज तुम्हें मुबारिक। अपनी अपनी समाज में रहो। उस समाज के उद्देश्य को पालो अर्थात् नेक पाक जीवन व्यतीत करते हुए अपने आप को जानो और प्रभु को पहचानो। ऐसे महापुरुषों का सब से प्यार होता है। चार शराबी आपस में गले मिल के बैठते हैं, तो प्रभु के भक्तों का आपस में प्यार क्यों न होगा ? श्री गुरु अर्जुन साहब, हज़रत मियाँ और छज्जु भक्त एक ज़माने में हुए। उनका आपस में बड़ा प्यार था। अनुभवी होगा तो उसके अन्तर में सब के लिये प्यार होगा। जहाँ दिल में प्यार नहीं वहाँ अनुभव नहीं। अनुभवी पुरुष तो सब के अन्तर में प्रभु को देखता है। यदि वह अवस्था नहीं तो समझो अभी अनुभव नहीं जागा। उनका उपदेश यह है कि मनुष्य जाति एक है। वह कहते हैं -

"We are members of the same family of God."

यही कुरान शरीफ भी कहता है।

''सब इंसान खुदा के कुनबे के अफराद हैं।''

गुरुवाणी में आया है।

एक पिता एकस के हम बारक, तू मेरा गुरहाई ॥

हम सब उस परमात्मा के बच्चे और आपस में भाई - भाई हैं। यह तो बाहरी रूप है, सब से ऊंचे धर्म का जो अनुभवी पुरुष हमें सिखाता है और अन्तर में मन को वश में करके आत्मा को इंद्रियों के घाट में ऊपर लाकर, अपने आप को जानना और प्रभु को पाना, यह पराविद्या या इल्मे सीना है जो सबके लिए एक है और रहेगी। यह है महापुरुषों का उपदेश उनकी तालीम जो सारी मनुष्य जाति के लिए एक है।

जिस महापुरुष (श्री हुजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज) के चरणों में बैठकर, मुझे परमार्थ की समझ आई, उन्हीं की कृपा से यह Common Ground (साँझी धरती सब के मिल बैठने की) यहाँ नज़र आ रही है, जहाँ इस वक्त भिन्न-भिन्न समाजों के हजारों भाई बैठे हुए हैं। हुजूर ही की Suggestion (तजवीज़) थी कि

कोई ऐसी Common Ground (साँझी धरती) बनाओ, जहाँ सब समाजों के भाई आपस में मिल कर बैठ सकें। वहाँ कोई खास रस्म रिवाज़ न रक्खो। हर समाज के अपने-अपने बोले (नारे - सत् सिरी अकाल, नमस्ते, जयरामजी की वगैरह) रहने दो। कोई खास चिन्ह चक्र न बनाओ। सो उन महापुरुष के कथनानुसार यह जगह बनाई गई है। आप देखेंगे यहाँ कोई मन्दिर वगैरह नहीं। लोग पूछते हैं कि मन्दिर कहाँ है ? मैं जवाब देता हूँ -

यहाँ कोई मन्दिर वगैरह नहीं बनाया मैंने। नीचे धरती है और ऊपर आसमान।

परमात्मा कहां नहीं है। जहाँ भाव सहित सीस झुका दो वही तीर्थ है।

"Every place is holy where devotion kneels" और सब से बड़ा हरि मन्दिर तो यह जिस्म है। बाहर के हरि मन्दिर इसी के नमूने पर हमारे समझाने बुझाने के लिए बनाए गए हैं। इसके अन्तर परमात्मा की ज्योति भी है और धुनि भी है। बाहर मन्दिरों में जो ज्योति जगाई जाती है और घण्टा बजाया जाता है, वह इसी सच्चे हरि मन्दिर की अन्तरी बनावट की नकल है। तुम्हारे अन्तर में खुदा का नूर है, परमात्मा की ज्योति है और इसमें वह कलामे कदीम, कलमा, शब्द या ध्वनि हो रही है।

ए खूदा बिनुमा मारा आं मुकाम। कन्दरो बे हर्फ मी रोयद कलाम॥

अर्थात् हे परमात्मा मुझे ऐसी जगह पर ले चल, जहाँ हर्फों के बिना कलाम (शब्द) उग रहा है। अक्षरी नाम केवल उसका बोध कराने के लिए ऋषियों, मुनियों, महात्माओं ने रखे हैं। नाम दो प्रकार के हैं। एक अक्षरी नाम जो ताकत का बोध कराते हैं, और एक वह ताकत जिसका बोध कराते हैं यह अक्षरी नाम। वह रमी हुई घट-घट व्यापी ताकत जो खण्डों ब्राह्माण्डों को बनाने वाली है और जिसे नाद, उधोगीत, शब्द, श्रुति, आकाशवाणी, कलमा, Word, सरोशा आदि नामों से बयान किया गया है। ''नाद से चौदह भवन बने।'' यह वेद कहता है। ''कलमे से चौदह तबक बने।'' यह मुसलमानों का धर्म ग्रन्थ कहता है। ईसाइयों के धर्म ग्रंथ बाईबल में आया है कि Word या कलमा या नाद या God in action power उस वक्त भी थी, जब दुनिया नहीं थी और जब यह दुनिया नहीं रहेगी, तब भी वह ताकत रहेगी। उस पॉवर (Power) के अनेकों नाम ऋषियों, मुनियों, महात्माओं ने रखे हैं। इन नामों से चलकर हमें नामी को पकड़ना है। उस ताकत से लगना है जिसका यह

अक्षरी नाम बोध कराते हैं। जब तक हम उस Power से नहीं लगते, जिसका Divine link घट-घट में मौजूद है, सन्तुष्टि नहीं होगी। मगर उसका ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से ऊपर जब तक न आए, हमें उसकी सूझत नहीं आ सकती।

महात्मा क्या कहते हैं ? पहली बात यह है कि नेक पाक जीवन बनाओ, सदाचारी बनो। यह ज़मीन की तैयारी परमार्थ के लिए है। दूसरी बात यह कि अपने आप को जानो, जो परम अर्थ है मनुष्य जीवन का। यह वह Common Ground (साझी धरती) है सब के लिए। सो यहाँ, इस जगह पर केवल Ethical (सदाचार की) और Spiritual (आत्मा ज्ञान की) तालीम दी जाती है। इसके अतिरिक्त और कोई चीज़ नहीं यहाँ। हर एक महात्मा के लिए, चाहे वह किसी देश या काल में आए, किसी भी समाज में आए, हमारे दिल में इज्ज़त और कद्र है। यहाँ हर एक महात्मा का कलाम लिया जाता है। कभी कबीर साहब, कभी गुरु नानक साहब, कभी पल्टू साहब, कभी किसी और महात्मा की वाणी पर विचार किया जाता है। पिछले हफ्ते हजरत मुहम्मद साहब की नसीयत का बयान था जो उन्होंने हजरत अली को की। सब महात्माओं की वाणी में Parallel thoughts एक से विचार मिलते हैं। जितना जिसका अनुभव था उतना-उतना वह हक़ीकत को बयान कर गये। ज़रूरत है उस तालीम को पाने की, जिसे पूर्ण पुरुष हर ज़माने में आ कर ताज़ा करते रहे। इसके लिए किसी अनुभवी पुरुष के पास जाना होगा। वह क्या कहता है ? सबके अन्तर में परमात्मा है। आत्मा उसकी अंश है। परमात्मा प्रेम है। आत्मा भी प्रेममय है और परमात्मा को पाने का ज़रिया (साधन) भी प्रेम है। पूजा वही सफल है जो प्रेम सहित की जाए। उसकी याद में अगर दिल न भर आए, आँख से आँसू न बहे तो कोरी जिमनास्टिक है। पूजा पाठ का उद्देश्य क्या है। यही कि अंतर में प्रभु का प्यार पैदा हो। दशम गुरु साहब फरमाते हैं -

साच कहूँ सुन लियो सबे जिन प्रेम कियो तिनही प्रभु पायो ॥

सौ साल तक नामाज पढ़ते रहो। जब तक परमात्मा का प्रेम मन में नही जागा हक़ीकत के राज़ की खबर नहीं मिलेगी।

अनुभवी पुरुष जब भी दुनियाँ में आए, उनका यही उपदेश रहा। हमारे हुजूर (श्री बाबा सावन सिंह जी महाराज) यही फरमाया करते थे कि तुम सब भाई-भाई हो। यहाँ तो कुछ नहीं, वहाँ लाख से भी ऊपर संख्या होती थी। सत्संग में हर

समाज के लोग उनमें शामिल होते थे। एक बार मैंने संगत की Gathering (संख्या) का अनुमान करने के लिए देखा कि लंगर में कितना नमक खर्च हुआ। मालूम हुआ एक दिन में 10 मन नमक उठा। आप अन्दाजा कर लें, कितने आदमी होंगे, खाने वाले। लाख से कम क्या होंगे।

"Right understanding से right thoughts बनेंगे। Right thoughts से right deeds बनेंगे। किसी समाज में रहो, यह आदर्श है सब समाजों का। अपनी - अपनी समाज में रहो, अपने-अपने रस्म रिवाज़ रखो। मगर समाजों में रहकर उस आदर्श को पाओ जिस की ख़ातिर तुम किसी समाज में दाखिल हुए हो। जितने महापुरुष आज दिन तक दुनिया में आये, एक ही तालीम थी उन सब की। आज वह दुनिया में आकर हमारी हालत देखें, हमारी, जो उनके अनुयायी होने का दावा करते हैं, तो वह यही कहेंगे कि यह हमारे अनुयायी नहीं हैं। उनकी तालीम क्या है ? एक ही तालीम है सब महापुरुषों की -

पहली बात — Know thy God.

और दूसरी बात — Love thy neighbour as thyself.

यह दो मिसाल उन्होंने हमारे सामने रखीं, जिनमें परमार्थ का सार आ जाता है। इन दोनों बातों को जीवन में धारण न करने के कारण यह सारा दुख है। तो दुख का मूल कारण है कि सही नज़री नहीं रही, Right understanding नहीं रही।

महापुरुष कोई नई समाज नहीं बनाते, न किसी पुरानी समाज को तोड़ते हैं। समाजें आगे ही कई बनी पड़ी हैं। उन में रहकर उस आदर्श को पाओ जो समाजों का सांझा आदर्श है। तो पहली बात है आपस में मिल बैठो। मिलकर बैठोगे तो बहुत सी गलत फहमियाँ जो झगड़ों का मूल कारण हैं दूर हो जायेंगी। तुम देखोगे कि तुम सब एक हो, तालीम एक है और आदर्श सबका एक है। ज़माने के हालात बदल गए हैं। आज इस बात की बड़ी भारी ज़रूरत है कि सब भाई आपस में मिल बैठें। रहो अपनी - अपनी समाज में, मगर समाज में रहते हुए इतने ऊँचे उठ जाओ कि सब मनुष्य जाति तुम्हारी समाज बन गये। हालात बहुत अबतर (खराब) हो चुके हैं। जिन पर प्रभु ने दया की है, यह भावना दी है, वह सब आपस में मिल बैठें और जो अबतरी हो चुकी है, उसे दूर करें। पश्चिम में यही बात मैंने पेश की तो बड़ा भारी

Response मिला। उन्होंने, सब ने, इस बात को Appreciate किया। यहां भी भाईयों को यह बात Appeal कर रही है।

यह उस प्रभु की तरफ से सामान बन रहा है। यह खुदाई रौ है (प्रभु की धारा है) इन्सान का काम नहीं। कारसाज़ वही प्रभु है, जिसने यह रौ पैदा की है। हमें सिर्फ खड़े होने की ज़रूरत है, मदद मिलेगी। ज़रूरत इस बात की है कि सब मिल बैठें। अपने को खुदाई फौज समझो, खुदाई जमात समझो। खुशी की बात है कि प्रभु की तरफ से ऐसा सामान बन रहा है, कि विभिन्न समाजों के भाई, भिन्न विचारधारा के लोग, एक दूसरे के करीब आ रहे हैं, भेद-भाव की दीवारें उठ रही हैं। यह मालिक की खास दया है। सिर्फ खड़ा होने की ज़रूरत है हमारी। खड़े हो जाओ। बाकी काम सब बना-बनाया है।

World Fellowship of Religions (विश्व धर्म संघ) की स्थापना के बाद सन्त समागम और सूफ़ी सन्त समाज की स्थापना इसी आदर्श की पूर्ति के सिलसिले की कड़ियाँ हैं, और जो कदम उठाया जा रहा है दिल्ली के शहरियों की तरफ से, National Integration (राष्ट्रीय एकता) के सिलसिले में, एकता और भाईचारे के सिलसिले में, मेरी शुभ भावनायें आपके साथ हैं। यह सारा काम प्रभु प्रेरणा से हो रहा है। उसी की दया से यह काम होगा।

✦ ✧ ✦